RAJYA SABHA

Wednesday, the 7th December, 2022 / 16 Agrahayana, 1944 (Saka)

The House met at eleven of the clock,
MR. CHAIRMAN *in the Chair.*

(*The National Anthem, "Jana Gana Mana", was played.*)

FELICITATIONS TO THE CHAIRMAN

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय सभापति जी, आदरणीय सभी सम्माननीय वरिष्ठ सांसदगण, सबसे पहले मैं आदरणीय सभापति जी को इस सदन की तरफ से और पूरे देश की तरफ से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आप एक सामान्य परिवार से आकर, संघर्षों के बीच जीवन-यात्रा को आगे बढ़ाते हुए आज जिस स्थान पर पहुँचे हैं, वह देश के कई लोगों के लिए अपने आप में प्रेरणा का एक कारण है। इस उच्च सदन में आप इस गरिमामयी आसन को सुशोभित कर रहे हैं। मैं कहूँगा कि देश जो किठाना के लाल की उपलब्धियों को देख रहा है, तो देश की खुशी का ठिकाना नहीं है।

आदरणीय सभापति जी, यह सुखद अवसर है कि आज आर्म्ड फोर्सेज़ फ्लैग डे भी है। आदरणीय सभापति जी, आप तो झुंझुनू से आते हैं, झुंझुनू वीरों की भूमि है। वहाँ शायद ही कोई परिवार ऐसा होगा, जिसने देश की सेवा में अग्रिम भूमिका न निभाई हो। यह भी सोने पर सुहागा है कि आप स्वयं भी सैनिक स्कूल के विद्यार्थी रहे हैं। मैं देखता हूँ कि किसान के पुत्र और सैनिक स्कूल के विद्यार्थी के रूप में आप में किसान और जवान दोनों समाहित हैं। मैं आपकी अध्यक्षता में इस सदन से सभी देशवासियों को आर्म्ड फोर्सेज़ फ्लैग डे की भी शुभकामनाएं देता हूं। मैं इस सदन के सभी आदरणीय सदस्यों की तरफ से देश की आर्म्ड फोर्सेज़ को सैल्यूट करता हूं।

महोदय, आज संसद का यह उच्च सदन एक ऐसे समय में आपका स्वागत कर रहा है, जब देश दो महत्वपूर्ण अवसरों का साक्षी बना है। अभी कुछ ही दिन पहले दुनिया ने भारत को जी-20 समूह की मेज़बानी का दायित्व सौंपा है। साथ ही यह समय अमृतकाल के आरम्भ का समय है। यह अमृतकाल एक नए विकसित भारत के निर्माण का कालखंड तो होगा ही, साथ ही भारत इस दौरान विश्व के भविष्य की दिशा तय करने में भी बहुत अहम भूमिका निभाएगा।

आदरणीय सभापति जी, भारत की इस यात्रा में हमारा लोकतंत्र, हमारी संसद और हमारी संसदीय व्यवस्था की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। मुझे खुशी है कि इस महत्वपूर्ण कालखंड में उच्च सदन को आपके जैसा सक्षम और प्रभावी नेतृत्व मिला है। आपके मार्गदर्शन में हमारे सभी

सदस्यगण अपने कर्तव्यों का प्रभावी पालन करेंगे। यह सदन देश के संकल्पों को पूरा करने का प्रभावी मंच बनेगा।

आदरणीय सभापति महोदय, आज आप संसद के उच्च सदन के मुखिया के रूप में अपनी नई ज़िम्मेदारी का औपचारिक आरम्भ कर रहे हैं। इस उच्च सदन के कंधों पर जो ज़िम्मेदारी है, उसका भी सबसे पहला सरोकार देश के सबसे निचले पायदान पर खड़े सामान्य मानवी के हितों से ही जुड़ा है। इस कालखंड में देश अपने इस दायित्व को समझ रहा है और उसका पूरी ज़िम्मेदारी से पालन कर रहा है।

आज पहली बार महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के रूप में देश की गौरवशाली आदिवासी विरासत हमारा मार्गदर्शन कर रही है। इसके पहले भी श्री राम नाथ कोविन्द जी ऐसे ही वंचित समाज से निकल कर देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचे थे और अब एक किसान के बेटे के रूप में आप भी करोड़ों देशवासियों, गाँव, गरीब और किसान की ऊर्जा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

आदरणीय सभापति जी, आपका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सिद्धि सिर्फ साधनों से नहीं, साधना से मिलती है। आपने वह समय भी देखा है, जब आप कई किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाया करते थे। गाँव, गरीब और किसान के लिए आपने जो किया, वह सामाजिक जीवन में रह रहे हर व्यक्ति के लिए एक उदाहरण है। आदरणीय सभापति जी, आपके पास सीनियर एडवोकेट के रूप में तीन दशक से ज्यादा का अनुभव है। मैं विश्वास से कह सकता हूं कि आप इस सदन में कोर्ट की कमी महसूस नहीं करेंगे, क्योंकि राज्य सभा में बहुत बड़ी मात्रा में वे लोग आए हैं, जो आपको सुप्रीम कोर्ट में मिला करते थे, इसलिए वह मूड और मिजाज़ भी आपको यहां पर अदालत की याद दिलाता रहेगा। आपने विधायक से लेकर, सांसद, केन्द्रीय मंत्री, गवर्नर तक की भूमिका में भी काम किया है। इन सभी भूमिकाओं में जो एक बात कॉमन रही, वह है देश के विकास और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए आपकी निष्ठा। निश्चित तौर पर आपके अनुभव देश और लोकतंत्र के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

आदरणीय सभापति जी, आप राजनीति में रहकर भी दलगत सीमाओं से ऊपर उठकर सबको साथ जोड़कर काम करते रहे हैं। हमने उपराष्ट्रपति के चुनाव में भी आपके लिए सबका अपनापन स्पष्ट रूप से देखा है। मतदान के 75 परसेंट वोट प्राप्त करके जीत हासिल करना अपने आप में अहम रहा है। सभापति जी, हमारे यहां कहा जाता है, *'नयति इति नायकः'* अर्थात् जो हमें आगे ले जाए, वही नायक है। आगे लेकर जाना ही नेतृत्व की वास्तविक परिभाषा है। राज्य सभा के संदर्भ में यह बात और महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि इस सदन पर लोकतांत्रिक निर्णयों को और भी रिफाइन्ड तरीके से आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी है, इसलिए जब आपके जैसा जमीन से जुड़ा नेतृत्व इस सदन को मिलता है, तो मैं मानता हूं कि यह इस सदन के हर सदस्य के लिए सौभाग्य की बात है। आदरणीय सभापति जी, राज्य सभा देश की महान लोकतांत्रिक विरासत की एक संवाहक रही है और उसकी शक्ति भी रही है। हमारे कई ऐसे प्रधान मंत्री हुए, जिन्होंने कभी न कभी राज्य सभा सदस्य के रूप में कार्य किया। अनेक उत्कृष्ट नेताओं की संसदीय यात्रा राज्य

सभा से शुरू हुई थी, इसलिए इस सदन की गरिमा को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए एक मजबूत जिम्मेदारी हम सभी के ऊपर है। आदरणीय सभापति जी, मुझे विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में यह सदन अपनी इस विरासत को, अपनी इस गरिमा को आगे बढ़ाएगा और नई ऊंचाइयां देगा। सदन की गंभीर चर्चाएं, लोकतांत्रिक विमर्श, लोकतंत्र की जननी के रूप में हमारे गौरव को और अधिक ताकत देंगे। आदरणीय सभापति महोदय, पिछले सत्र तक हमारे पूर्व उपराष्ट्रपति जी और पूर्व सभापति जी इस सदन का मार्गदर्शन करते थे और उनकी शब्द रचनाएं, उनकी तुकबंदी सदन को हमेशा प्रसन्न रखती थी। ठहाके लगाने का बड़ा अवसर मिलता था। मुझे विश्वास है कि आपका जो हाज़िर-जवाबी स्वभाव है, वह उस कमी को कभी खलने नहीं देगा और आप सदन को वह लाभ भी देते रहेंगे। इसी के साथ मैं पूरे सदन की तरफ से, देश की तरफ से और अपनी तरफ से आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, hon. Deputy Chairman.

श्री उपसभापति : आदरणीय सभापति जी, उच्च सदन राज्य सभा के आज उच्च आसन को ग्रहण करने पर आपको बहुत-बहुत बधाई। शीतकालीन सत्र के पहले दिन बहुत गर्मजोशी व आत्मीयता से आपका अभिनंदन है। सदन के इतिहास में इस आसन पर बैठने वालों का गौरवपूर्ण इतिहास है। अपने-अपने तरीके से सदन के कामकाज को सुचारू रूप से चलाने में सबका महत्वपूर्ण योगदान है। इनमें से कुछ लोग संसदीय बैकग्राउंड से थे और कुछ संसदीय जीवन के बाहर से भी आए, लेकिन आपको पब्लिक और पार्लियामेंटरी लाइफ, दोनों का विस्तृत अनुभव है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने बहुत विस्तार से आपके जीवन के बारे में बताया। आप साधारण किसान परिवार में जन्मे और आपकी स्कूल की आरंभिक शिक्षा गांव में हुई। इसके बाद तरह-तरह के संघर्ष और कठिनाइयों के बीच अपनी प्रतिभा के बल पर आप सैनिक स्कूल, चित्तौड़गढ़ पहुंचे। आपने प्रतिष्ठित महाराजा कॉलेज, जयपुर से विज्ञान से स्नातक की पढ़ाई की और फिर आपने लॉ की डिग्री राजस्थान विश्वविद्यालय से ली। इसके बाद आपने जिला स्तर से लेकर हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक लंबे समय तक वकालत की, यानी ग्रासरूट से लेकर ऊपर तक लीगल सिस्टम का भी आपको लंबा और समृद्ध अनुभव है। फिर आप विधान सभा और लोक सभा के सदस्य रहे। आप केंद्र सरकार में मंत्री भी रहे, जहां आपने संसदीय मंत्रालय का काम-काज संभाला। इसके बाद आपने राज्यपाल का दायित्व भी संभाला। इस तरह गांव के परिवेश से निकलकर लीगल और संसदीय क्षेत्रों का लंबा और समृद्ध अनुभव लेकर आज आप इस मुकाम पर पहुंचे हैं। पुनः आपका अभिनंदन और बहुत बधाई। मैं ऐसा मानता हूं कि आपके रिच एक्सपीरिएंस के साथ आपका लंबा सार्वजनिक जीवन, आपको इस सदन के संचालन एवं माननीय सदस्यों के संरक्षक जैसी चैलेंजिंग भूमिका का बहुत बेहतर ढंग से निर्वाह करने में मदद करेगा। आपके सौम्य स्वभाव और व्यवहार कुशलता के संदर्भ में मैं हिंदी मुहावरे को पुनः रिपीट कर रहा हूं, जो कि माननीय प्रधान मंत्री ने कहा, 'सोने पर सुहागा' जैसी बात है। सदन के काम-काज में हम सबका सहयोग आपको हमेशा मिलेगा। आपको पुनः बधाई और शुभकामनाओं के साथ मैं अपनी बात खत्म करता हूं। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, hon. Leader of the Opposition.

विपक्ष के नेता (श्री मल्लिकार्जुन खरगे) : माननीय सभापति जी, विपक्ष के साथियों और अपनी ओर से मैं राज्य सभा के सभापति के रूप में आपका अभिनंदन करता हूं। आपने देश के दूसरे सबसे बड़े संवैधानिक पद उपराष्ट्रपति की जिम्मेदारी 18 अगस्त, 2022 को संभाल ली थी। वैसे तो मैं व्यक्तिगत तौर पर आपसे मिलकर आपको बधाई दे चुका हूं, लेकिन अपर हाउस में सभापति के रूप में आपके स्वागत का मौका हमें आज मिला है। प्रधान मंत्री जी ने आपके काम-काज और व्यक्तित्व के बारे में हमें बहुत कुछ बताया है और उस पर बहुत रोशनी डाली। मैं उन बातों को फिर से दोहराना नहीं चाहता हूं। मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि अपर हाउस के संरक्षक के रूप में आपकी भूमिका बाकी भूमिकाओं से बहुत बड़ी है। आप जिस आसन पर बैठे हैं, वहां देश की महान हस्तियां बैठ चुकी हैं। हमारे 6 सभापति बाद में भारत के राष्ट्रपति भी बने। आप भूमि पुत्र हैं, जैसा कि प्राइम मिनिस्टर साहब ने कहा कि आप किसान के पुत्र हैं, लेकिन मैं तो आपको भूमि पुत्र कहूंगा। राजस्थान के एक गांव से उपराष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति जैसे बड़े ओहदे तक आप पहुंचे। आप संसदीय परम्पराओं को समझते हैं। आप नवीं लोक सभा में चुने गये थे और पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्ट्री में उप-मंत्री रहे थे। आप राजस्थान विधान सभा में एम.एल.ए. और पश्चिमी बंगाल में कई सालों तक राज्यपाल रहे। आप कोऑपरेटिव मूवमेंट में और कई खेल संगठनों से जुड़े रहे। आपकी पढ़ने-लिखने में रुचि है, आपका प्रोफाइल बहुत बड़ा है, मैंने उसे पढ़ा है। हमारे देश में संविधान सबसे ऊपर है और वह संसद की लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार स्तम्भ है। संसद के पास संविधान संशोधन का भी अधिकार है।

राज्य सभा और लोक सभा मिलकर भारत की संसद बनती है, कोई अकेला सदन खुद में पूर्ण नहीं है। संविधान के दायरे में दोनों सदनों को अपनी प्रक्रिया और नियम तय करने का अधिकार है। हमारी संसदीय प्रणाली में राज्य सभा को चैम्बर ऑफ आइडियाज़ या विचारों का सदन कहा जाता है। यह परमानेंट हाउस है और राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है। राज्यों की राजनैतिक तस्वीर यहां नजर आती है। शुरुआत से ही संसदीय क्षेत्र के तमाम दिग्गज यहां शोभा बढ़ाते रहे हैं।

राज्य सभा ने भारतीय लोकतंत्र में सम्मान की परम्परा को मजबूती दी है। अलग-अलग विचारधाराओं की राजनीति का केन्द्र होने के बाद भी यहां सबका लक्ष्य देश की तरक्की और उन्नति के बारे में सोचते रहना है। हम सभी यही चाहते हैं कि जनता के सवालों पर गंभीर चर्चा हो और आप समस्याओं का समाधान निकालें। आपको सभा के दोनों पक्षों की हालत, नियमों, मेम्बर्स के अधिकारों और भावनाओं की जानकारी है। जैसे संसद दो सदनों को मिलाकर बनती है, उसी तरह से लोकतंत्र सत्तापक्ष और विपक्ष के दो पहियों पर चलता है। दोनों का अपना महत्व है, इसीलिए तो लोकतंत्र है और लोकतंत्र को यशस्वी बनाया जा सकता है।

बाबा साहेब ने संसद की कार्यवाही को असरदार बनाने के लिए दोनों सदनों के लिए स्वतंत्र सचिवालय के गठन की बात कही थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के प्रयासों से राज्य

सभा सांसदों को पब्लिक अकाउंट्स कमेटी और कमेटी ऑन पब्लिक अंडरटेकिंग्स जैसी फाइनेंशियल समितियों की सदस्यता मिली थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने कभी राज्य सभा के अधिकार को कम नहीं होने दिया। वर्ष 1963 में बजट सत्र के दौरान उन्होंने साफ कहा था कि लोक सभा और राज्य सभा मिलकर भारत की संसद बनाते हैं, हमारे संविधान के अनुसार दोनों सदनों की अथॉरिटी के बीच मनी बिल्स को छोड़कर कोई अंतर नहीं है। आज जब मैं ये बातें कह रहा हूं, तो हमें बहुत कुछ बातें याद आ रही हैं। विपक्ष के लोग संख्या बल में भले ही कम हों, लेकिन आप जानते हैं कि उनके अनुभव और तर्कों में ताकत रहती है, परन्तु समस्या यह है कि इनकी जगह नम्बरों की गिनती होती है न कि विचारों के बारे में सोचा जाता है। एक दूसरी दिक्कत यह भी है कि हाउस की सिटिंग्स कम होने के कारण जनता के मुद्दों पर चर्चा के लिए उचित समय नहीं मिल पाता है। हम लोग गरीबों, दबे-कुचलों, एस.सी./एस.टी., किसानों और अत्याचार की शिकार महिलाओं की हालत पर ढंग से बातें नहीं रख पाते और बिल्स भी बहुत जल्दबाजी में पास होते हैं। पहले जहाँ साल के 100 दिनों से ज्यादा संसद चलती थी, वहाँ अब 60-70 दिनों तक भी नहीं चल पाती। हमारी आबादी, अपेक्षाएँ और समस्याएं बढ़ी हैं। यदि पिछले एक दशक का आँकड़ा देखें, तो 2012 में संसद की सबसे ज्यादा 74 सिटिंग्स हुई थीं। इसके बाद 2016 में 72 सिटिंग्स हुईं। हाउस में सिटिंग्स बढ़ेंगी, तो अच्छा नतीजा निकलेगा और मैं आपसे यह आशा करता हूं कि आपके नेतृत्व में चर्चा के दिन बढ़ेंगे।

सभापति जी, आप तो कानून के जानकार हैं। आप इसे अच्छी तरह समझेंगे कि अगर कानून जल्दबाजी में बनते हैं, तो उनमें खामियाँ होती हैं और जो सुप्रीम कोर्ट एवं हाई कोर्ट के जजेज़ हैं, उनकी टीका-टिप्पणी भी हम पर होती रहती है। कई जजेज़ ने यह काम भी किया है। उनका सही तात्पर्य नहीं निकलता और ऐसे कानूनों की क्वालिटी पर सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट की टिप्पणियाँ करना हमारी संसदीय प्रणाली की सेहत और इमेज के लिए ठीक नहीं लगता, इसलिए हम चाहते हैं कि बिल्स को ठीक से एग्ज़ामिन करने के काम को सेलेक्ट कमेटी, ज्वाइंट कमेटी और निचले सदन में स्टैंडिंग कमेटी एवं उस विभाग से संबंधित संसदीय समिति को ज्यादा से ज्यादा भेजा जाए। जिन समितियों में इन बिल्स को भेजा जाए, वहाँ इन पर विस्तार से चर्चा हो और राज्य सभा का वास्तव में यही मुख्य काम भी है। मैं इस संदर्भ में 13 मई, 1952 में राज्य सभा की हुई पहली बैठक के सभापति, डा. राधाकृष्णन् जी द्वारा कही गई एक बात का जिक्र करना चाहूंगा। उन्होंने कहा था, 'हमें इस देश की जनता के लिए, यह बात न्यायोचित ठहराने के लिए पूरी ताकत के साथ जुट जाना चाहिए कि जल्दबाजी में पारित किए जाने वाले कानून पर रोक लगाने के लिए सेकंड चैम्बर की जरूरत है।' इसके, अर्थात् सेकंड चैम्बर के अध्यक्ष भी अब आप बने हैं। इस मौके पर बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन मैंने कुछ ही बातें रखी हैं और मैं उम्मीद करता हूं कि आप हमारी भावनाओं को समझेंगे। हम विपक्ष की ओर से यही कहना चाहेंगे कि हम आपको अपनी ओर से पूरा-पूरा सहयोग देंगे।

सभापति महोदय, मैं एक और बात कहना चाहता हूं। मुझे वह बात ज़रा खटक रही है, क्योंकि जब कभी हमारे अपोजिशन के लोग मिलते हैं, हमारी पार्टी के लोग मिलते हैं, तो मैंने लास्ट टाइम यहाँ सदन में एक शेर बोला था, शायरी की थी, उसके ऊपर आपने ज्यादा से ज्यादा

ध्यान देकर मेरे लिए ऐसा क्यों कहा, यह बात आपने बार-बार कही है, लेकिन मैं यह दोहराऊंगा और आपको इसका भी बुरा नहीं मानना चाहिए। वह शेर कुछ इस प्रकार से है :

'मेरे बारे में कोई राय न बनाना ग़ालिब,
मेरा वक्त बदलेगा और तेरी राय भी।'

सभापति जी, इतना कहते हुए मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि यह सदन बहुत सुचारू रूप से चलेगा और हम हर बात पर आपको पूरा-पूरा सहकार देने की कोशिश करेंगे। सभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Derek O' Brien.

SHRI SUKHENDU SEKHAR RAY (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, I have been authorised by my Party to speak. Just now, I have informed the Secretariat about this.

Sir, first of all, on behalf of All India Trinamool Congress, I extend the warmest felicitations to your honour for being elected as the hon. Vice-President of India as well as taking over the charge as the hon. Chairman of this august House. For the last four years, we have experienced your style of functioning when you were the hon. Governor of West Bengal and, personally speaking, I got opportunities of exchanging a few letters with you on some legal and constitutional issues wherefrom I could understand what my friends used to tell me 'this Governor is a constitutional expert and a legal luminary.' I found it right from the expressions made by your honour on those communications. Actually, that belief was further strengthened.

Now that your honour has taken over the charge of this august House, we submit to your honour with all grace that from now on, we believe, हिन्दी में कहावत है कि 'आप आये, बहार आई।' We expect that your elevation to this position will help strengthen the conducive atmosphere of this august House and that both the Treasury Benches and the Opposition Benches would get adequate opportunities in the deliberations to be made on various issues, Bills, etcetera.

Sir, I have some suggestions to make for your kind consideration. हमने देखा कि लोक सभा में कुछ बिलों पर, कुछ मुद्दों पर बहुत देर तक चर्चा होती थी, लेकिन कभी-कभी ऐसा हुआ कि राज्य सभा में समय हमें उतना नहीं मिला। इसलिए जो देश के लिए जरूरी मुद्दे हैं, उन मुद्दों पर ज्यादा समय तक चर्चा होनी चाहिए, खास करके जो छोटी पार्टियां हैं, उनको दो-तीन

मिनट का समय मिलता है। हम भी कभी-कभी ऐज़ वाइस चेयरमैन कुर्सी पर बैठते हैं, this time also you have made me as one of the Vice-Chairmen in the Panel. तो छोटी पार्टियों को लिए बहुत दर्द होता है, मैं महसूस करता हूं कि उनको समय नहीं मिलता है। इसके लिए थोड़ा समय बढ़ाना चाहिए, नहीं तो लोक सभा और राज्य सभा के अधिवेशन में लोक सभा तो बनी रहेगी और राज्य सभा कहीं परलोक सभा न बन जाये, यह हमारी आशंका है। जिस तरह समय कम होता जा रहा है, जो मैंने पिछले 11 सालों में देखा है तो इसके लिए मेरा आपसे निवेदन है।

दूसरा, जैसा कि हमारे लीडर ऑफ दि अपोज़िशन ने बताया कि scrutiny of the Bills by the Standing Committees and, at times, by the Select Committees is very important because it is required for a better legislation. Unless the Bills are scrutinised properly, either by a Standing Committee or a Select Committee, at times, mere discussion here will not be helpful. This is my second submission.

My Party's further suggestion is that we require either one Short Duration Discussion or one Calling Attention Motion per week. There is Rule 267 which is very sparingly adhered to for reasons not known to us. But, there were times when we experienced that on greater issues, national issues, discussion under Rule 267 was allowed very frequently. My only suggestion would be that at least, per Session, one issue under Rule 267 may be taken up. This is my submission, and, Opposition-wise, in a democracy, as you know, the voice of dissent is also to be heard. Otherwise, the idea of participating democracy will be a futile exercise. With these words, I wish you all the best for the coming years. Thank you, Sir.

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Sir, I bestow upon you my profound wishes profusely, on behalf of the DMK party on your assuming the Chairman of the Second Chamber in the Parliament. When our party leader, the Chief Minister of Tamil Nadu, Mr. M. K. Stalin met you to congratulate you on your having been elected as the Vice-President, you had expressed your wishes on how to run the House. He has assured you that the DMK will extend its fullest cooperation in running a smooth House, and I stand by his words. I assure you again, on behalf of the Members of my Party here, that we will ensure that we will cooperate in all ways for smooth running of the Parliament.

Sir, you are the 14th Vice-President of the largest democracy in the world. Nowhere in any other democracy does this system exist. By virtue of being the Vice-President, you are part of the Executive and, as per the Constitution, you are the ex-officio Chairman of the Rajya Sabha and, by that you are part of the Parliament. So,

you have two caps. You have dual capacity. You are the Vice-President and part of the Executive and you are part of the Parliament. Everyone knows very well that you are an expert in the Constitution; you are thorough with the Constitution. Your legal track record is a very good example of that. Now, we know, during the inter-session period, after you won the elections, everyday, you have been here in the Parliament attending office and now we are sure that you are thorough with the rules of procedures and rules of conduct in the Rajya Sabha. We expect a lot from you. We expect you to be impartial. The Opposition parties should have equal share as that of the Treasury Benches and the numbers of the Members in the House should not decide the quality of the debate. I met you twice at your residence and yesterday in the B.A.C. meeting. On all the three occasions, you have made us realise, which was very consoling, that you have great concern for the smaller parties in the Parliament, the Nominated Members, the Independent Members and those who are in smaller numbers in the House. Their party maybe bigger outside, but the Members will be lesser here. You said that time should be distributed to all of them and that was a great consolation to all of us because we were suffering all these days only because of that. We hope that the coming days would be very bright. India is the largest democracy and the Parliament is a debating forum. When I met you first, you asked me the way to avoid Members from coming into the Well of the House. So, you have inferred rightly what is happening here than what should not. I told you very simply that if we are heard, we won't be compelled to come to the Well of the House. The Members of the Parliament come here to voice for the people, their issues, their concerns, and when we are not heard or when we are not allowed to speak, we have to resort to democratic processes of coming into the Well. That has happened for years together. So, whenever we have an issue and we rise to say something, if we are heard for a minute or two, automatically, we will cool down since we have let out our feelings. Sir, we have so much of hope on you. I should mention what Ms. Maya Angelou, a great African-American poet, said when Mr. Clinton took his office. She said, you may have he grace to look up and out; your country, look upon our faces and say simply with hope -- Good morning.'

Every New Year dawns with the hope that the coming year will be very prosperous. So, everyday dawns that the day will be very bright. I wish you good morning every day, Sir. And, you also please wish us not only good morning but also ensure that Parliament will be very productive in the coming days. We are very hopeful and I, once again, assure you that the DMK will extend its fullest cooperation. Thank you very much.

SHRI H.D. DEVEGOWDA (Karnataka): Respected Chairman, Sir, I am the only single Member in this House from my party who have had the bitter experience during the last twenty years. It is very difficult to get an opportunity to speak. The decision taken by both the Houses is that a single Member cannot take more than 2-3 minutes. That is the bitter experience I have had either in this House or in the other House.

Sir, being a farmer, coming from the rural area, I used to take a lot of time on subject of farming community and on the subject of rural development. But, unfortunately, the time fixed is only 2-3 minutes. This is the bitter experience that I have got. So, I humbly request you, Sir, that whenever these issues come up before the House for discussion, the experience I have had is that I used to get only 2-3 minutes. This should be reconsidered when a subject belongs to rural India or farming community or any development on these issues come up for discussion. I don't want to take unnecessary time of the House. This is the only request I would like to make to the hon. Chairman and Vice-President of India.

With these words, I once again thank you very much hoping you allow me to speak a few minutes more on issues of farming community and also rural development. This is my humble request to the Vice-President the country and hon. Chairman of this House. Thank you.

श्री राघव चड्ढा (पंजाब) : सर, मैं आम आदमी पार्टी की ओर से और हमारे नेता श्री अरविंद केजरीवाल जी की ओर से आपका बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं और इस नई पारी के लिए आपको खूब सारी शुभकामनाएं देता हूं। आपके जीवन का सफर एक बहुत बेहतरीन सफर रहा है। एक साधारण से किसान परिवार में जन्म लेने के बाद आपने कई संघर्षों का सामना किया। आपको विधायक के तौर पर, सांसद के तौर पर, मंत्री के तौर पर, राज्यपाल के तौर पर और अब देश के उपराष्ट्रपति के तौर पर, राज्य सभा के सभापति के तौर पर अपनी सेवाएं देने का मौका मिला। सर, हम जैसे लाखों युवाओं के लिए आपका जीवन, आपका करियर एक प्रेरणा स्रोत है।

सर, मैं एक कृषि प्रधान सूबे का रिप्रेज़ेंटेटिव बन कर इस सदन में आया हूं और उसका प्रतिनिधित्व कर रहा हूं। मेरा मानना है, चूंकि आप एक किसान परिवार से आते हैं और आपका परिवार सदैव से खेती और किसानी से जुड़ा रहा है, तो इस देश के किसानों के मुद्दे इस सदन में गूंजेंगे और उनके अधिकारों की बात होगी। सर, इसी के साथ-साथ बीते कुछ हफ्तों में, जब से आप उपराष्ट्रपति बने हैं, आपने इस सदन के लगभग सारे सदस्यों से एक व्यक्तिगत रिश्ता सा बनाया है। मुझे भी दो-तीन बार आपसे मिलने का सौभाग्य मिला और जो प्यार, जो स्नेह, जो

वार्म्थ मुझे आपसे मिली, मैं आज उसके आधार पर कह सकता हूँ कि इस सदन के बहुत सारे सदस्य केवल पार्लियामेंटरी इश्यूज़ ही नहीं, लाइफ के बहुत सारे पर्सनल इश्यूज़ भी आपसे डिस्कस करने में नहीं हिचकिचाएँगे।

सर, आप इस सदन के सभापति हैं। You are the eldest in the House. मैं इस सदन का सबसे कम उम्र का युवा सदस्य हूँ। I am the youngest in the House. तो जो परिवार का सबसे बड़ा सदस्य होता है, वह परिवार के सबसे छोटे सदस्य का खास खयाल रखता है, उसे ज्यादा प्यार देता है, उसे बोलने के ज्यादा मौके देता है, उसे ज्यादा इंटरवेंशंस देता है, उसके ज़ीरो ऑवर्स ज्यादा सेलेक्ट होते हैं, उसके स्टार्ड क्वेश्चंस ज्यादा लगते हैं और उसे थोड़ी शैतानी करने की भी छूट होती है। तो मैं यह उम्मीद करूँगा कि आपका विशेष प्यार और विशेष स्नेह हमारी छोटी पार्टी और सदन के सबसे युवा सदस्य होने के नाते मेरे प्रति रहेगा। आपको इस नयी पारी के लिए ढेरों शुभकामनाएँ। आपका बहुत-बहुत अभिनन्दन, बहुत-बहुत स्वागत।

MR. CHAIRMAN: Those whom I love and respect, they suffer the most!

डा. सस्मित पात्रा (ओडिशा) : माननीय सभापति महोदय, आज इस घड़ी में जब हम आपका स्वागत कर रहे हैं, तो मेरी पार्टी बीजू जनता दल की तरफ से और हमारे माननीय नेता और माननीय मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक जी की तरफ से हम आपका वेलकम करते हैं, अभिनन्दन करते हैं और इस आश्वासन के साथ करते हैं, मान्यवर, कि हमारी संसदीय विधि-व्यवस्था की जो लक्ष्मण रेखाएँ हैं, उन लक्ष्मण रेखाओं को माननीय मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक जी ने कभी लांघने का कोई स्कोप नहीं दिया और हमेशा से एक चीज़ हम सबको भी कही है कि जब भी संसद में जाओ, मर्यादाओं की रक्षा करो और संसद उचित तरह से चल सके, इसकी पूरी-पूरी कोशिश करो। तो मान्यवर, मैं यह अवसर लेना चाहता हूँ कि आपकी अध्यक्षता में, आपके मार्गदर्शन में बीजू जनता दल, इस सदन की जो गरिमा है, उस गरिमा को रखते हुए हमारे माननीय नेता श्री नवीन पटनायक जी के मार्गदर्शन में हमने जो सीखा है, उसके साथ हम इस सदन को स्मूथली और सुचारू रूप से चलाने में आपको पूरा सहयोग देंगे।

मान्यवर, मैं यह अवसर यह कहने के लिए लेना चाहता हूँ that you are a distinguished man of law, who is presiding over the highest House of law-making. And, as a distinguished man of law, presiding over the House of law-making, आपका जो रिच एक्सपीरिएंस है, जो वाइब्रेंसी है, वह हम सबको और सीखने के लिए एक अवसर देगी।

मान्यवर, कई माननीय सदस्यों ने आपके इंटेलेक्ट के बारे में कहा। मैं आपके विशाल हृदय के बारे में दो शब्द कहना चाहूँगा। मान्यवर, कुछ ही दिन पहले मैं अपने परिवार के साथ सदन में आया था और सदन बन्द था। मैं उनको घुमाने के लिए लेकर आया था। जब मैं उनको यहाँ पर घुमाने के लिए लेकर आया, तो मुझे सुनने में आया कि आप चेम्बर में हैं, यहाँ आये हुए हैं। स्वाभाविक तौर से आप सभापति हैं, माननीय उपराष्ट्रपति जी हैं, तो अप्वाइंटमेंट लिया जाता है,

प्रोटोकॉल लिया जाता है और उसके बाद आपसे मिला जाता है। पता नहीं मुझे क्या हुआ, मैं आपसे एक-दो बार मिला था, मुझे लगा कि नहीं, मैं माननीय सभापति जी को एक स्लिप भेजता हूँ कि मैं अपने परिवार के साथ आया हूँ, क्या मुझे आपके 30 सेकंड्स मिल सकते हैं? माननीय सभापति महोदय, आपका इतना विशाल हृदय है कि आपने सिर्फ दरवाजा ही नहीं खोला, अपने दिल का भी दरवाजा खोला, मेरे पूरे परिवार को अन्दर बुलाया, चाय पिलायी, गपशप की और मेरे बच्चों को भी आपने इंस्पायर किया। यह बताता है कि किस तरह से आपका हृदय, आपकी सोच सिर्फ सांसदों के लिए नहीं, उनके परिवारों के लिए भी है और आपका जो विश्वास है कि किस तरह से आने वाले दिनों में इस सदन को और आगे लिया जा सकता है, यह इसका एक प्रतिबिम्ब है।

मान्यवर, आपने बिज़नेस एडवाइज़री कमेटी में कल एक बहुत खूबसूरत बात कही। मैं शान्त होकर सुन रहा था। आपने कहा that whenver there is any matter, I first look to the Opposition; then, I look to the Government; and, then, again I look to the Opposition. That shows the strength; that shows your commitment; that shows your vision of running the House, Sir. I thank you for that. मान्यवर, मैं आखिरी बात कहूँगा और वह यह है कि यह सदन काउंसिल ऑफ स्टेट्स है। हम ओडिशा राज्य से आते हैं और राज्य से संबंधित कई ऐसे विषय होते हैं, जिन पर सदन में चर्चा होती है। इस सदन में स्टेट्स के बारे में चर्चा होती है।

मान्यवर, जब हमारे प्राइवेट मेम्बर्स बिल्स आते हैं, ज़ीरो ऑवर मेंशन्स आते हैं, स्पेशल मेंशन्स आते हैं, तो कई बार हाउस स्थगित होने के कारण वे सब नहीं लिए जाते हैं, वे सब धुल जाते हैं। हम रीजनल पार्टीज़ के पास बिल्स पर चर्चा करने के लिए ज्यादा स्कोप नहीं होता है, इसलिए हमारी एक अपेक्षा यह है कि ज़ीरो ऑवर, स्पेशल मेंशन्स आदि के लिए कोई प्रावधान किया जाए, ताकि रीजनल पार्टीज़, जो स्टेट्स से आती हैं, वे इस काउंसिल ऑफ स्टेट्स में अपनी आवाज़ को और बेहतर तरीके से रख सकें। ऐसा करने से इस काउंसिल ऑफ स्टेट्स की जो सोच है, वह और मजबूत होगी।

मान्यवर, मैं आखिर में उड़िया में दो शब्द कहूँगा, *"Many congratulations and I welcome you, Sir. All our best wishes are with you and will always remain with you." आपके साथ हमारी शुभेच्छा है, आपके साथ हमारा अभिनन्दन है और हम यह आशा करते हैं कि आपके मार्गदर्शन में हम और आगे बढ़ेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति : श्री रामदास अठावले जी।

---

*English translation of the original speech delivered in Odia.

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले) : आदरणीय सभापति जी**:**

"मैं तो अन्याय के खिलाफ लड़ा हूँ,
इसलिए आपको बधाई देने के लिए यहाँ खड़ा हूँ।
आपका अनुभव बहुत ही बड़ा है,
इसलिए आपने संघर्ष का पहाड़ चढ़ा है।
मेरी पार्टी का मैं हूँ अकेला,
लेकिन मेरे हाथ में है संविधान की वेला।
मैं तो हूँ आपका सच्चा चेला,
मुझे मत छोड़ो अकेला।
जिन्होंने उपराष्ट्रपति का सर किया है गर्व,
उनका नाम है धनखड़।
हमें मिल कर उखाड़ देनी है विषमता की जड़,
इसमें जरूर सफल होंगे आदरणीय धनखड़।
और उसमें जो सदस्य करेंगे फ्रैक्शन,
उनके ऊपर होना चाहिए कड़ा एक्शन।
हमें तो मजबूत करना है भारत नेशन,
हंगामा करने का हमें नहीं चाहिए फैशन।"

हमें पूरा विश्वास है कि आप संघर्ष करते-करते यहाँ तक पहुँचे हैं। आप एक गाँव में किसान के घर पैदा हुए और वहाँ से संघर्ष करते हुए यहाँ तक पहुँचे हैं, इसलिए आपके पास बहुत अनुभव है। आपने बहुत बड़ा काम किया है। आपने पश्चिमी बंगाल के रूप में गवर्नर का काम किया है। वहाँ बहुत बड़ा चैलेंज था। वहाँ काम करना बहुत मुश्किल था, लेकिन आपने पश्चिमी बंगाल में बहुत अच्छा काम किया है। आपने पश्चिमी बंगाल में अच्छा काम किया है, इसलिए आपको यहाँ लाने की कोशिश हुई है। आप एक संघर्षशील नेता हैं। अगर वहाँ पर आपका काम ठीक नहीं होता, तो शायद आपको यह पद मिलना मुश्किल था, लेकिन आपने बहुत अच्छा काम किया है। यह ठीक बात है कि पश्चिमी बंगाल भी अपना ही है। वहाँ के सभी नेता भी अपने हैं। वह देश का एक राज्य है। कोई भी राज्य हो, यहाँ पर किसी पार्टी की सत्ता आती है, जाती है, कोई मुख्य मंत्री होता है, कोई नहीं होता है। मैं भी लोक सभा में तीन बार सांसद रहा हूँ। मैं शिरडी से हार गया, लेकिन मैं घर में बैठा नहीं, बल्कि घूमता रहा। मैं कॉंग्रेस पार्टी के साथ रहा। कॉंग्रेस पार्टी के नेता मेरे दोस्त हैं, समाजवादी पार्टी के नेता मेरे दोस्त हैं, कम्युनिस्ट पार्टी के नेता मेरे दोस्त हैं। अभी बीजेपी के मेरे दोस्त हैं, मैं बीजेपी के साथ आया हूँ। मैं भारतीय जनता पार्टी के साथ इसलिए आया हूँ कि मुझे शिरडी में हराया गया। मुझे शिरडी में हराया गया, मुझे मंत्री नहीं बनाया गया, फिर मैं इधर-उधर क्या करता, इसीलिए मुझे कांग्रेस पार्टी को छोड़ना पड़ा। आज नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सबका साथ, सबका विकास, दिख रहा है सारा प्रकाश। मतलब, यह जो प्रकाश दिख रहा है, उसमें मैंने नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जाने का निर्णय ले लिया। मैं बाबा साहेब अम्बेडकर जी का अनुयायी

हूँ। बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने बताया है कि सत्ता में आना चाहिए, लेकिन मेरी अकेली पार्टी सत्ता में नहीं आ सकती है, इसलिए मैं किसी के साथ मिलकर ही सत्ता में आ सकता हूँ। जब लोग मुझसे पूछते हैं कि लोक सभा में आपकी पार्टी का एक भी मेम्बर नहीं है, तब भी आप मंत्री कैसे हैं, तो मैंने बोला कि आप माननीय नरेन्द्र मोदी जी से जाकर पूछो कि मैं मंत्री कैसे हूँ। मैं अकेला हूँ, लेकिन मेरी पार्टी के लोग देश भर में हैं, मेरी पार्टी नॉर्थ-ईस्ट में भी है।

सर, आप मुझे बोलने का मौका दीजिए। मुझे मालूम है कि आप बहुत अच्छे आदमी हैं। आप हर बार मुझसे बोलते थे कि कविता सुनाओ। अगर आप मुझे ज्यादा बोलने देंगे, तो मैं कविता सुनाऊँगा, नहीं तो एक भी कविता नहीं सुनाऊँगा। यह ठीक बात है। मैं कविता सुनाता भी रहूँगा। आप अनुभवी हैं, इसलिए आप अपोज़िशन को भी मौका दीजिए। आप उनको हंगामा करने के लिए मौका दीजिए, लेकिन एकाध दिन हंगामा करने के लिए मौका दीजिए, दूसरे दिन ऐक्शन होना चाहिए और हाउस का काम भी चलना चाहिए। सर, आप सर्वोच्च हाउस के चेयरमैन बन गए हैं, इसलिए मेरी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आरपीआई), जो कि गरीबों की पार्टी है, दलितों की पार्टी है, इस पार्टी की तरफ से मैं आपके साथ हूँ। मैं हमेशा आपका साथ देता रहूँगा और आप मुझे बोलने का मौका देते रहिए। जय भीम, जय भारत!

DR. K. KESHAVA RAO (Telangana): Sir, first of all, without risking the repetition, I would share the sentiments expressed by all my colleagues regarding your personality and the challenges that this House is going to, perhaps, throw at you. The little experience that I had yesterday with you, interface in the BAC, assures me that things are going to be very peaceful and normal. This, I say, repeating, of course, what my hon. colleague said, 'You would look to the Opposition first, to the Ruling Party next no doubt, because they have to respond; then go back to the Opposition.' This fulfils the very spirit of parliamentary democracy.

The other day, yesterday morning, we had the All Party Meeting. The total brunt of the discussion was that 'This Parliament should represent the voice of the Opposition.' This came from the TMC. I would rather say, it is not 'Opposition', but 'voice of the people', 'the sufferers'; the people who are suffering. So, everybody must get some chance to speak, and the answer to that is 'time management'.

Sir, I would not take much time but must tell you, this is nothing but 'time management'. Rules are rules, but some have to be kept by the spirit and some by their word. And I tell you, you might be an expert in Constitution, which you are, we would not try to challenge, but the rules and the Constitution are always not going to pay in a deliberation like this. We need to understand the mood of the people, the spirit of their saying and also the needs because we are not at crossroads. We are at

'crossed roads'. The total things are crossed. So, the things require an entirely different light.

Sir, the last sentence I would say, there seems to be a big discussion yesterday morning and also yesterday evening with you on the 'small parties.' Sir, we are 'small parties'. No doubt. But it is a relative term. 'Small' is a relative term. But what I am concerned is about the Union Territories, the North-Eastern States where the membership is only one. This is not a 'small party'. It is 'sole party'. So, they need time. It is the Council of States. If the State is not represented in the Council of States, there cannot be a greater perplexing paradox than that. So, we need to see that we do not forget the 'small parties'. We need to look at them from an entirely different angle because they need to be represented in this House.

12.00 Noon

Sir, your wisdom and your personal talk to us on Constitutional ethos yesterday gave us some reassurance and let me tell you, while sharing all the sentiments, I say it was all understated, because you deserved more than that. Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Shri Prem Chand Gupta.

श्री प्रेम चंद गुप्ता (बिहार) : आदरणीय सभापति महोदय, संसदीय लोकतंत्र के इस गरिमामयी पद पर आप आसीन हुए, इसके लिए मैं आपको मेरी तरफ से, मेरी पार्टी की तरफ से और हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद जी की तरफ से बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। श्रीमान जी, हमें पूरी उम्मीद है कि राष्ट्र के उपराष्ट्रपति और इस सभा के सभापति के रूप में यह सदन आपके नेतृत्व में बहुत ही सुचारू रूप से चलेगा। ऐसी हमारी आशा है। श्रीमान जी, आप ग्रामीण परिवेश से आते हैं और किसान परिवार से हैं। आपने बड़े संघर्ष किए हैं, मेरा सौभाग्य है कि मैं आपको पिछले 35 सालों से जानता हूं। श्रीमान जी, मैंने आपका वह सफर देखा है कि किस प्रकार से आपने सभी बाधाओं को पार करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल किया है। आप एक सच्चे कर्मयोगी हैं, आप एक बहुत बड़े कानून के ज्ञाता भी हैं। आप यंगेस्ट एज में देश के उच्चतम न्यायालय के सीनियर काउन्सेल अप्वाइंट हुए थे, यह एक बहुत ही सौभाग्य की बात थी। शायद बहुत लोगों को नहीं मालूम कि इंटरनेशनल और नेशनल आर्बिट्रेशन में आपकी बड़ी भारी एक्सपर्टीज़ है। श्रीमान जी, ज्यादा न कहते हुए मैं यही कहना चाहूंगा कि आपके नेतृत्व में इस गरिमामयी सदन का बहुत सुचारू रूप से संचालन होगा और हम सब लोगों को बात करने का, बोलने का मौका मिलेगा। इसके साथ मैं एक बार फिर आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूं, धन्यवाद।

SHRI ELAMARAM KAREEM (Kerala): Hon. Chairman Sir, on behalf of the Communist Party of India (Marxist), I welcome you as Chairman to this House. Sir, as a well-experienced parliamentarian, I hope you would be able to uphold the glorious past of our Parliament. Our nation is defined as a Union of States by the Constitution. Each Member represents a State. The principles of the Constitution such as federalism, secularism, democracy and social justice need to be protected. If these principles are undermined, it may affect the unity of our nation. I hope, under your leadership, the Upper House of Parliament would discharge its duties strictly honouring the principles of the Constitution and Rules of Business. I am very proud to welcome you, Sir, because you come from the farming community who are the *annadatas* of this country. Legislation is the prime duty of the Parliament. Hence, continuous disruption should be avoided. When I met you personally, you requested that the functioning of the House should not be disrupted. I agree with you, but for that the process of legislation should be undertaken through a strictly democratic process. People's burning issues must be reflected in the House. For that, ample opportunity should be given to hon. Members. I hope that debates on different issues will be done here in a healthy manner. Important Bills should be referred to Standing Committees or Select Committees for scrutiny, which, nowadays, is not happening in this House. Nowadays, it is very unfortunate that Parliament's scrutiny is neglected. I hope you would uphold the concept of the Constitution and the principles of democracy. Number is the only issue here. Whether the party has large number or small number, every group, party and individual should be respected and given opportunity to raise their reasonable issues in this House. I also request the House and the Ruling Benches, please cooperate with the hon. Chairman. Thank you.

श्री राम नाथ ठाकुर (बिहार) : आदरणीय सभापति जी, मैं अपने दल, जनता दल(यू), हमारे नेता नीतीश कुमार जी, अपने और अपने परिवार की तरफ से आपका हार्दिक अभिनंदन और स्वागत करता हूं। मैं आपके सामने निवेदन के तौर पर दो बातें रखना चाहता हूं। जिस तरह आप किसान के रूप में गरीब परिवार से आए हैं, वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में जब आपके यहां गरीब मुवक्किल आते होंगे, तो उनके प्रति आपकी जो हमदर्दी रहती होगी, उसी हमदर्दी को रखते हुए छोटे-छोटे दल के लोगों को अधिक समय देकर आप गौरवान्वित होने का अनुभव प्राप्त करेंगे, मेरा आपसे यही निवेदन है। सभापति जी, अंत में मैं आपसे कहना चाहता हूं:-

"जो कुछ मेरे पास था, तुझ तक ले आया हूं,
देख दामन छोड़कर न जाना तू,
याद रहे हम सब की, यही कहने आया हूं।"

DR. M. THAMBIDURAI (Tamil Nadu): Hon. Chairman, Sir, on behalf of the AIADMK Party and my General Secretary, Edapaddi Palaniswamy, I congratulate you on occupying this highest position. You know very well, as the hon. Prime Minister said, so many eminent persons have served in the House and eminent persons are still serving in the Upper House. You can see the photograph of Dr. Radhakrishnan. He was a great philosopher. He occupied the position that you are occupying now. Therefore, you are an eminent person. You also served as a Minister in the Ninth Lok Sabha. My association with you dates back to that time when I was also the Member of that Lok Sabha. As a Minister, you performed very well. Not only in the Lok Sabha, you also visited the Rajya Sabha as a Minister. Therefore, it is not a new thing to you. When I remember eminent persons, I also remember our great leader of Tamil Nadu, Perarignar Anna, who served this House and delivered many speeches here. In the same way, my leader, Madam Amma Jayalalithaa, also served this House. We also have the opportunity to serve this House under your leadership and guidance. As our hon. Members said, this House is part of Parliament; I accept that. At the same time, it represents the Council of States. Most of the Members here represent various States. They come here not only to pass legislations but also to protect the State's right of federalism. Federalism is the basic concept that this House represents. As other hon. Members have said about you, you come from an agriculture family and then you became an eminent lawyer and you also served as the Minister of State. Therefore, you very well know the sentiment of the House. As has been stated by other Members also, we may be in small numbers here at present, but at some time in future, we may be in large numbers also. The politics may change. Therefore, small numbers cannot be treated as small Members because people are always with the small Members. That is very crucial in democracy. Therefore, as other Members have requested, we have to give more time to 'Others'. Then, I also want to make a humble representation. I have also served as the Presiding Officer for nearly 15 years in the Lok Sabha. I have served as the Deputy Speaker and also on the panel of Vice-Chairmen there. At that time, I remember, while allocating time to various political parties, we had to take into account the number of their Members in the House. Here, what happens is that a single Member is given the same time as is given to a party with four Members, like we have four Members here and we are also given the same time. It is not correct. I request you that we have to consider the numbers. In the Lok Sabha, we have to consider numbers only. According to that, we call the Members, but here, the system is different. I request you to consider this.

Sir, I have a very affectionate relation with you and, on behalf of my Party, we will always be supporting you. Once again, I congratulate you on behalf of our AIADMK Party and our General Secretary, Shri K. Edappadi Palaniswami. Thank you, Sir.

श्री प्रफुल्ल पटेल (महाराष्ट्र) : सभापति महोदय, मैं अपने सभी साथियों के जज़्बातों के साथ अपने जज़्बात भी जोड़ते हुए आपको इस उच्च पद को ग्रहण करने के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मेरा सौभाग्य रहा है कि 1989 से आपका और मेरा बहुत नजदीक का संबंध रहा है और इसलिए आपके व्यक्तित्व को, जैसा कई सदस्यों ने अपने अनुभव में कहा, मैं भी उस बात को समझता हूं और इसमें जोड़ता हूं। इस सदन के बारे में और अपने अनुभवों के बारे में हमारे कई साथियों ने यहां पर चर्चा की है। इसलिए उन्हीं बातों को या आपके व्यक्तित्व के बारे में कही गई बातों को न दोहराते हुए मैं यह कहूंगा कि लोकशाही में यह तो अलग बात है कि किसी की संख्या ज्यादा होती है और किसी की कम होती है और इस बारे में कई लोगों ने बोला है। देवेगौड़ा जी जैसे हमारे वरिष्ठ पूर्व प्रधान मंत्री जी ने भी अपनी बात कही। कभी हम भी पहली पंक्ति में बैठते थे और आज तीसरी पंक्ति में बैठते हैं। यह तो समय-समय की बात है, लेकिन अनुभव का कोई और पर्याय नहीं होता है। इस सदन में अनुभव का कुछ न कुछ लाभ लेना चाहिए और आप इस बात को भली-भांति समझते हैं। मेरी आपसे हुई व्यक्तिगत चर्चा में भी आपने इस बात को हमेशा मान्यता दी है। मैं केवल इतना ही कहूंगा कि आज तो आपको यहां बड़ी वेल-डिसिप्लिन्ड क्लास नजर आ रही है। आज तो आपको सब लोग शिष्टबद्ध दिख रहे हैं। पहला दिन है इसलिए आपके सम्मान में कोई व्यवधान नहीं आने वाला है, लेकिन लोकतंत्र में ये सभी बातें, जो आपने टीवी पर देखी होंगी या आपने अपने पुराने अनुभव में देखा होगा, उसका कहीं-कहीं आपको यहां पर ट्रेलर दोबारा जरूर दिखेगा, इसमें कोई शक नहीं है। मैं कहूंगा कि यह लोकतंत्र की एक बहुत बड़ी बात है। जैसे कभी-कभी प्रेशर कुकर में स्टीम छोड़ी जाती है, वैसे ही आप अगर उसको मॉड्युलेट करेंगे, तो निश्चित ही आप इस सदन को दोनों तरफ से चलाने में बहुत सफल रहेंगे, इतना मैं आपको जरूर विश्वास दिलाना चाहता हूं।

अंत में, हमारे नेता शरद पवार जी, एनसीपी और हमारे सदस्यों की ओर से मैं इतना ही कहूंगा कि हमने आज तक हमारी पार्लियामेंटरी गरिमा और हमारे जो रूल्स हैं, उनको ध्यान में रखा है और कभी लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन नहीं किया है। हमारी ओर से आपको पूरा सहयोग मिलेगा, आगे भी मिलेगा, हमेशा मिलेगा। मैं आपको अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से, अपने नेता की ओर से फिर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। आपका कार्यकाल सफल रहे, इसकी प्रार्थना करते हुए, मैं आपसे इजाज़त लेता हूं।

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, the list is long. I am overwhelmed. I would only suggest that we economise time. Now, Professor Ram Gopal Yadav.

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश) **:** श्रीमन्, मैं अपनी समाजवादी पार्टी की ओर से और अपनी ओर से आपका हृदय से स्वागत करता हूं। जब मैं आपसे पहली बार मिला, तो आप बहुत खुलेपन से मिले - क्योंकि इससे पहले जब मिलते रहे, तो एक प्रोटोकॉल की दीवार बनी रहती थी, उतना ही मिलना, यहां बैठना, इतनी दूर बैठना - वह कुछ नहीं था। यह स्वाभाविक तौर से बहुत अच्छी बात थी और हमारे सारे मेम्बर्स ने इसे महसूस किया और इसकी तारीफ भी की है।

जहां तक इस सदन की बात है, मैं एक बात आपको बताना चाहता हूं कि जब यहां बात होती है, तो सब लोग सैद्धांतिक रूप से कहते हैं कि मैं सहयोग करूंगा, मैं सहयोग करूंगा और कल आप देखेंगे कि बहुत सारे लोग सहयोग नहीं करेंगे। कारण यह होता है कि बहुत सारे ऐसे मुद्दे होते हैं, जो जनआकांक्षाओं के खिलाफ होते हैं, वे या तो गवर्नमेंट के आदेश होते हैं या फैसले होते हैं अथवा बिल्स होते हैं, जो आ रहे हैं, उनमें ऐसे प्रोविजन्स होते हैं, जो आम लोगों के हितों को एड्वर्सली प्रभावित करने जा रहे होते हैं, तब जनता, जिनके हम प्रतिनिधि हैं, उनकी अपेक्षा होती है कि हमारी बात को यहां पर बैठे हुए लोग कहें और अगर इजाज़त नहीं दी जायेगी, तो ये साइलेंट नहीं बैठ सकते हैं और साइलेंट बैठेंगे, तो वे कल हमसे कहेंगे कि हमारे हितों के खिलाफ जब कानून बन रहे थे, तब आप हाउस में क्या कर रहे थे! यह विपक्ष के लोगों की मजबूरी सबको समझने की आवश्यकता है। इसलिए मैं आपको बधाई तो देता हूं, आपका स्वागत करता हूं, लेकिन आपसे यह वायदा नहीं करता हूं कि सदन में व्यवधान उत्पन्न नहीं होगा। अगर जनहित के खिलाफ कोई बात होगी, तो निश्चित रूप से व्यवधान होगा, बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Shrimati Priyanka Chaturvedi.

श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी (महाराष्ट्र) **:** ऑनरेबल चेयरमैन सर, मैं अपनी पार्टी शिवसेना की तरफ से और पार्टी के अध्यक्ष श्री उद्धव बाला साहेब ठाकरे जी की तरफ से आपको बधाई देना चाहूंगी और आपको शुभकामनाएं भी देना चाहूंगी कि आने वाले समय में आपका फ्रूटफुल टेन्योर रहे, सक्सेसफुल टेन्योर रहे।

सर, राज्य सभा काउंसिल ऑफ स्टेट्स है। हम सब अपने-अपने राज्यों से चुनकर आते हैं, राज्यों की जो तकलीफें हैं, जो दिक्कतें हैं, हम उनको नेशनल लेवल पर लाकर एक व्यापक चर्चा चाहते हैं। राज्य सभा एक इम्पॉर्टेंट प्लेटफॉर्म है, जहां हम अपने राज्यों की दिक्कतें बता सकते हैं। दुर्भाग्य यह है कि आजकल सुनवाई कम होती है और आरोप ज्यादा लगते हैं, तो आपकी तरफ देखकर मेरी यही उम्मीद रहेगी कि आप इस पर संज्ञान लेंगे और विपक्ष को भी बोलने का मौका मिलेगा। इसके साथ ही साथ कई सांसदों ने कहा कि हम लक्ष्मण रेखा पार नहीं करना चाहते हैं और लक्ष्मण रेखा पार भी नहीं करते हैं। मैं मानती हूं कि विपक्ष में, यहां पर कोई भी लक्ष्मण रेखा पार नहीं करना चाहता है, लेकिन सर, जब अहंकार धर्म के ऊपर हो जाता है, तो लक्ष्मण रेखा पार करना विपक्ष की जिम्मेदारी हो जाती है, उस कार्य को हमने निभाया है और आगे भी निभाते रहेंगे। हमें उम्मीद है कि आप अपने एक्सपीरिएंस को ध्यान में रखकर, हम सभी को, हमारी पार्टी की बात को रखने, हमारे राज्य की बात को रखने को महत्व देंगे, बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, I welcome you, I bow my head before you and I wish you all possible cooperation.

Sir, I want to request you to kindly cooperate with us to cooperate with you. When I say this, I mean not only you but the Government also have to cooperate with us. We are here to raise the voice of the people, and we have been doing that task of ours. Sir, I represent a small party, but I believe that small party is a great party, which has always stood for the cause of the people, for the cause of the country and for the cause of the Constitution. We have always held the values of democratic norms, secularism, federalism and this country's socialist goals. We came here with this responsibility and we have a right here, a duty here to raise those tasks in our capacity as much as possible. Sir, this is the Parliament and in this Parliament we are sure that we have a role as Opposition. We play here only that role. We heard the hon. Prime Minister in the morning. He talked about *Amrit Kaal*, the G-20 chairmanship. We all wish that in this *Amrit Kaal*, during this period of chairmanship, India come to a better position in the Global Hunger Index. We stand for that. He talked about *adivasis, dalits* and women. We wish that all those promises made by the Government for these deprived sections are fulfilled. We argue for that, and for such activities we expect them to cooperate with us. Sir, you are a *kisan*-oriented man. He also talked about *kisans*. We have a request. Kindly legalize the MSP for the *kisans*. (*Time-bell rings*) One more thing, Sir.

Short Duration Discussion, Calling Attention, Rule 267, all these are in the rule book. We ask for only those items of the rule book, but many a time when our request is denied, we have no other option but to raise the voice. Kindly help us not raising the voice.

I wish to say one more thing, Sir. I cannot restrict myself because I felt it very seriously. When we met yesterday for the first time, I thought that you would be a man of great protocol and great high-handedness. I came with that expectation. But you shattered all my expectations. You behaved with me as a man known to me for so many years. I never expected a Vice-President, a Chairman, to come to the car to see off a Member. You did that. Yesterday, for the first time, I talked to my wife about this. I never discuss my parliamentary experience with my wife on day-to-day basis. When I see her, I tell her. But yesterday, I thought that I should talk to her. I told her that I met the Chairman and I told her that he asked about you, he asked

about our daughters. He knows everybody. She asked me, "How"? I said, "I don't know how!" But that is you, Sir. My party and I have great trust on you, Sir. With these words, I conclude. Thank you, Sir.

श्री रामजी (उत्तर प्रदेश) **:** सभापति जी, मैं हमारी बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्षा आदरणीय बहिन कुमारी मायावती जी की तरफ से और अपनी तरफ से आपको ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं, आपका स्वागत और अभिनंदन करता हूं। सभापति जी, आपका जीवन वाकई संघर्षपूर्ण रहा है। आपने संघर्ष के दौरान विभिन्न पदों पर रहकर देश की सेवा की और आज आप एक छोटे से गाँव से निकलकर इस देश के उपराष्ट्रपति बने हैं और राज्य सभा के अध्यक्ष भी हैं। आपका यह जो संघर्षपूर्ण जीवन है, यह हम सभी लोगों के लिए प्रेरणादायक है। हमें पूरी आशा और विश्वास है कि हम सभी, जो विपक्ष के लोग हैं और सत्ता पक्ष के भी लोग हैं, आपके लिए दोनों तरफ के लोग बराबर हैं।

सभापति जी, जनहित के ऐसे तमाम मुद्दे आते हैं, जिनके संबंध में हम लोग ज़ीरो ऑवर में बोलने के लिए आपको एप्लिकेशन देते हैं, लेकिन हमें उन तमाम मुद्दों पर बोलने के लिए समय नहीं मिलता। हमारा नाम कट जाता है और हमें समय नहीं मिलता है। उसमें 10 लोगों का नाम सेलेक्ट होता है। मैं आपसे रिक्वेस्ट करूंगा कि ज़ीरो ऑवर में सभी सांसदों की जेन्युइन बातों को टाइम दें, ताकि जो जनहित के मुद्दे हैं, उनके लिए यहां पर आवाज़ उठाई जा सके। आपका लगाव हमारी पार्टी के संस्थापक माननीय श्री कांशीराम साहब के साथ बहुत रहा है। हमें पूरा विश्वास है कि आपका आशीर्वाद हम सब पर बना रहेगा, धन्यवाद।

SHRI KANAKAMEDALA RAVINDRA KUMAR (Andhra Pradesh): Hon. Chairman, Sir, I thank you for giving me this opportunity. I, on behalf of Telugu Desam Party and on behalf of our leader, Shri Nara Chandrababu Naidu, congratulate you on your occupying the Chair.

Sir, you hail from a remote village in Rajasthan and now you have reached the second highest constitutional post, which is the post of the Vice-President of India. Apart from that, you are a constitutional expert. You have the position to protect and safeguard the provisions of the Constitution.

Sir, you belong to the legal fraternity. I am happy to note that you have practised in the Magistrate Court, District Court, High Court and the Supreme Court.

Sir, you know the importance of giving opportunity and time to Members. If an advocate does not get an opportunity or is not allowed by the Judge to present his case, he may lose his case. If an opportunity is given to a Member, then he can

justify his duties as a Member of the Rajya Sabha. Similarly, I hope you will give opportunities to the smaller parties. I am a lone Member from my party. I expect that you will give me sufficient time to participate in the debates. I once again congratulate you and thank you, Sir.

श्री अब्दुल वहाब (केरल) : आदरणीय सभापति जी, मेरी तरफ से और मेरी पार्टी इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग, मेरे पार्टी प्रेज़िडेंट सैयद सादिक अली शिहाब थंगल की तरफ से आपको कामयाबी मिले। हम हिन्दी में पहली दफा बोल रहे हैं **...(व्यवधान)...**अच्छा है न? मैं यहां पहली बार हिन्दी में बात कर रहा हूं। My DMK friends may not like this. For the last 12 years, I am known as a one-minute speaker. Or two minutes is the maximum time that I take even though I am allotted three minutes. My only request to you is that instead of putting us as tailenders, you sandwich us between large parties like give chance to one large party then one small party and then another large party and then one small party. It will be justified and we can tell something or make some points. Otherwise, everything is told by everybody. मेरी रिक्वैस्ट है कि ऐसा करने में आप कामयाब हों। नमस्कार।

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA (Assam): Sir, I, on behalf of my party, Asom Gana Parishad (AGP), congratulate you on your election to the post of the Vice-President of India and the Chairman of the Upper House of our Parliament.

Sir, it is known to everybody that you have gained vast experience in your social and political life. You started your career as a good lawyer. You served the nation as Minister. You served the nation as Parliamentary Affairs Minister. You even served as the Governor of West Bengal. It is a golden opportunity for us to welcome you as the Chairman of the Upper House of our Parliament.

Sir, I come from the North-Eastern Region of our country. You cannot compare the population structure of our region with other parts of the country. Our population is less compared to other States of the country. Sir, this is your first day. So, I would like to give an example. Having the least population, Mizoram has only one Member in Rajya Sabha; Arunachal Pradesh has one Member in Rajya Sabha; Nagaland has only two Members in Rajya Sabha. It is the Council of States. They are elected.

MR. CHAIRMAN: Your point is registered.

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA: Yes, Sir. It is registered. They represent Mizoram. It means they have been elected by 100 per cent. But, here, they are treated as a small party. They do not get time to speak. My submission is, kindly allow all the small parties some more time so that they can at least address the problems faced by their respective States. With this, I again welcome you as the Chairman of the Rajya Sabha. Thank you.

SHRI VAIKO (Tamil Nadu): Hon. Chairman, Sir, I am very thankful to you for giving me this opportunity at the fag end of the discussion. Normally, we, the small parties, are the victims. Of course, we can express our views in this Parliament. But, whenever discussion takes place, bigger parties are given more time than they deserve. Small parties should be given ample opportunity to protect the cornerstones of the Constitution -- secularism, federalism and social justice. Today, we are standing at the crossroads of history. Secularism has become a question mark; social justice has become a question mark. So, what are we going to do with these questions? Brutal majority should not bulldoze the basic concepts of the Constitution, particularly social justice and secularism. If it happens, then, the future of the country and the integration of the country will become a question mark. This is my perception. I am very thankful to you. You are a legal luminary and you have handled so many portfolios as a Minister, as a parliamentarian and as a jurist. Therefore, we also expect due justice from the Chair. Once again, I extend my heartiest felicitations and congratulations to you on becoming the Chairman of this House. Thank you very much.

SHRI G.K. VASAN (Tamil Nadu): Sir, unity in diversity is the strength of our country. This House represents exactly that. The Members of this House represent various States -- villages, towns, district headquarters and cities. People of those areas expect the Members to echo their voice. That is the expectation from the Members. You are a man of wisdom. We are confident that you will, definitely, guide us getting the support of our people. Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Dr. Wanweiroy Kharlukhi; not here. Shri K. Vanlalvena; not here. Shri Jose K.Mani; not here. Now, Shri Jayant Chaudhary.

श्री जयंत चौधरी (उत्तर प्रदेश) : सभापति जी, मुझे व्यक्तिगत तौर से बहुत खुशी का अनुभव हो रहा है कि आपके सान्निध्य और नेतृत्व में मुझे इस सदन के एक सदस्य के तौर पर काम करने का मौका मिलेगा। सभी सदस्यों ने और माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी आपके जीवन परिचय के बारे में

बहुत सारी बातें बताईं। खुशी इस बात को लेकर भी है कि आप एक गांव के परिवेश से आते हैं, इसलिए किसान की जो पीड़ाएं होती हैं, उनकी जो मेहनत होती है या धरती की जो पुकार होती है, उस भाषा को आप भली-भांति जानते हैं। आप यह भी समझते हैं कि अक़सर सरकार के दावे और इस सदन में की गई बातों से, धरातल पर जो तस्वीर होती है, वह भिन्न होती है, अलग होती है। हम आपका संरक्षण चाहेंगे कि अगर कोई भी माननीय सदस्य यहां गरीब से जुड़ी कोई बात, आदिवासी से जुड़ी कोई बात अथवा किसान या गांव से जुड़ी कोई बात करता है, तो कहने वाले सदस्य को आप अधिक वक्त दें।

सभापति जी, जब आपने उपराष्ट्रपति पद का दायित्व संभाला, तो बहुत प्रेम भाव के साथ हम सबको बुलाया। मुझे तो आपने केसर-बादाम के दूध का इतना बड़ा गिलास पिलाया था कि उसकी मिठास अभी भी मेरी ज़बान पर है। हम बस आपका संरक्षण और आशीर्वाद चाहेंगे कि समय-समय पर कुछ मीठी, कुछ कड़वी बातें इस सदन में हम उठा पाएं, धन्यवाद।

SHRI AYODHYA RAMI REDDY ALLA (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, on behalf of the Y.S.R. Congress Party and our President, Shri Y.S. Jagan Mohan Reddy, we congratulate you and welcome you as Chairman of this august House.

Sir, you are a role model, when we look at your personal life, the discipline, the commitment, the hard work, with which you have grown, and also the professional life in which your wisdom, your experience and expertise was contributed. Then, we have seen your social contributions and also the political contributions and the rich experiences, which you have gained and served this nation, make you the real role model for this country. I want to tell you and, through you, I want to communicate to this House that as a largest democracy we have a greater responsibility to showcase to this world that India is the largest democracy alone not just in its constitution but in practice also. So, a clear dimension and direction need to come under your leadership through this House the way we are going to make ourselves present.

Secondly, during your leadership, this country is going to become the third-largest global economy. So, we have to ensure how a global leader has to present itself, how the issues have to be raised in the House and how the House has to give directions to the rest of the country. That needs to be brought in. Also, by 2047, when we achieve hundred years of our Independence, the country is going to be the second-largest economy. So, keeping those things in mind, the House also has to behave and we have to also make ourselves accountable to the rest of our country.

Therefore, with these points, we welcome you and we wish you all the very best. Thank you very much.

श्री गुलाम अली (नाम निर्देशित) : मैं प्रेज़िडेंट ऑफ इंडिया के द्वारा नॉमिनेटेड मेम्बर होने के नाते, चेयरमैन साहब को दिल की गहराइयों से मुबारकबाद देता हूं। आपके साथ हमारी जो दो-तीन मुलाक़ातें हुईं, ओथ के टाइम पर और बाद में, साथ ही देश के वज़ीर-ए-आज़म ने आज सुबह जो कहा, हमें आपके विज़न से, आपके ज़िन्दगी के तजुर्बे से, as a new Member, सीखने का मौका मिलेगा। हम उम्मीद करते हैं कि इस विज़न का हमें भरपूर फ़ायदा मिलेगा। You can feel the feeling of all the Members, शुक्रिया।

SHRIMATI P.T. USHA (Nominated): Sir, in a short span as the Vice President of India and Chairman of this august House, you have earned the confidence of people and people's representatives across the political parties. This is evident from the emotions poured in the speeches of leaders of both the Treasury and Opposition Benches. My special thanks to hon. Prime Minister for his concern for the marginalized. It is a grace for the nation that our hon. President of India belongs to tribal community. It is a great honour for the tribal community, and a son of a farmer is now Vice-President of India. This is New India where republican spirit is now transformed from symbolism to substantive form.

Sir, your role and personality, your intellect and philosophy of life will create a history and add values to the second Chamber.

Sir, we are Upper House. We are expected to play a vital role as statesmen. Your leadership will be helpful to strengthen the glory of the House.

With these words, I congratulate you. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Pramod Tiwari.

श्री प्रमोद तिवारी (राजस्थान) : माननीय सभापति जी, मैं आपका स्वागत करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ, आपको शुभकामनाएँ भी देता हूँ और इस बात के लिए धन्यवाद भी देता हूँ कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया।

मान्यवर, जिस कुर्सी पर आप बैठे हैं, वहाँ बहुत बड़ी-बड़ी विभूतियाँ बैठी हैं। उनका पुराना इतिहास आपके सामने है। आज उनका नाम आदर से लिया जाता है, परन्तु कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनकी पहचान कुर्सी से होती है और कुछ लोग ऐसे होते हैं, जब कुर्सी पर वे बैठ जाते हैं, तो

उस कुर्सी की गरिमा बढ़ जाती है। मैं यही कामना करूँगा कि जब आपको याद किया जाए, तो राज्य सभा की गौरवशाली परम्पराओं के लिए याद किया जाए।

सर, हमारे लीडर ऑफ दि अपोज़िशन ने आपकी सारी खूबियाँ बतायीं, अन्य लोगों ने भी बतायीं। एक खूबी, जो छूट गयी है, मैं उसे जोड़ना चाहता हूँ। हम लोगों ने आपको सड़क पर विपक्षी नेता के तौर पर संघर्ष करते ज्यादा देखा है, सत्ता में कम देखा है। यह मैं अपना भविष्य ठीक करने के लिए बोल रहा हूँ, हम सबका भविष्य। **...(व्यवधान)...** तो मैं समझ सकता हूँ कि आपको विपक्ष की चिन्ताओं, परेशानियों और कष्टों का अंदाजा किसी और से बेहतर होगा, क्योंकि एक साधारण परिवार से यहाँ तक का सफर आपने तय किया है। अभिषेक भाई अभी कह रहे थे कि लीगल फील्ड में आपका बड़ा नाम था। सर, लेकिन वहाँ एक फर्क था, यहाँ एक फर्क है। वहाँ तो आप प्रार्थना करते थे कि फैसला गरीब के हक में आये, परन्तु सर, अब तो यहाँ आपको फैसला करना है - फैसला जो कभी बड़ों के खिलाफ होता है और बड़ों से मेरा मतलब यहाँ सरकार से है - तो सर, इससे आपको ज्यादा दुआएँ मिलेंगी, ज्यादा आशीर्वाद मिलेगा, ज्यादा लोगों को आपका इतिहास याद रहेगा।

सर, इतिहास तो सब पढ़ लेते हैं। मैं सिर्फ एक आग्रह करना चाहता हूँ। आप इतिहास में नहीं पढ़े जायें, इतिहास आप बनायें, इसके लिए पूरा विपक्ष आपके साथ खड़ा रहेगा, यह हम सब आपसे वादा करते हैं। **...(व्यवधान)...**

श्री सभापति : श्री जोस के. मणि।**...(व्यवधान)...**

श्री प्रमोद तिवारी : सर, एक और बात कह कर मैं अपनी बात जरूर खत्म करूँगा। सर, मैं उत्तर प्रदेश से हूँ और राजस्थान से चुन कर आया हूँ। अब यह कहने की जरूरत नहीं कि राजस्थान में आपने जन्म लिया है, वहाँ बहुत विषमताएँ हैं। मुकुल भाई भी राजस्थान से आये हैं। तो अगर आप हम लोगों का खयाल रखेंगे, तो आप राजस्थान का खयाल रखेंगे, अपना खयाल रखेंगे। मैं आपसे आग्रह करूँगा कि भविष्य में आप ऐसे ही मुस्कराते रहें। **...(व्यवधान)...** सर, मेरी तरफ देख लीजिए, ज़रा मुस्करा दीजिए। **...(व्यवधान)...** आप ऐसे ही मुस्कराते रहिए, यह हमारा प्रयास होगा। इनके चक्कर में मत पड़िएगा। इनके चक्कर में जो पड़ा, वह गया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Jose K. Mani.

SHRI JOSE K. MANI (Kerala): Sir, I extend my hearty congratulation to you for taking up the post of Chairman of this Upper House. Sir, we had a meeting yesterday, the all- party meeting, the meeting of leaders of all the parties. The great concern over there was that the number of working days and the number of working hours are reducing in the Parliament. There is an issue that every year, before, after or in between the Session, there could be election anywhere in the nation. It could be in

one State or in another State, but the schedule of the Parliament is shifted as per the election in the State. My only request is that irrespective of the election,--Parliament is very important--you should not reduce the number of days and number of hours just because of the election in some State. This is actually unjust, we are being unjust to the people of the nation. I plead on behalf of all the parties over here that perhaps the number of days should be increased and we should increase the deliberations and discussions so that the people will benefit. Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Now Sant Balbir Singh. Please be brief.

SHRI SANT BALBIR SINGH (Punjab): *"Many many thanks to you Sir. I have to thank only and say nothing else. First of all, as you have assumed the responsibility of the office of hon. Chairman here in Rajya Sabha, our best wishes and prayers for you. We are with you.

Secondly, when I first came to the Parliament, this House, the hon. Vice President before you, Shri Naidu gave me the support and the opportunity to speak in Punjabi, and the problem that I had placed before him, I am thankful to him and also wish to thank all other M.Ps here that they appreciated my difficulty. And special thanks to you, Sir, that the papers that I wanted to be given in Punjabi, I have got those papers in Punjabi today.

Sir, thank you very much that you met us on that day and the way you met us, we were impressed because if one listens to you, then half their grief is gone, and you took the decision then and there itself.

I also wish to especially say that when I first came to the Parliament, then parliament could not function for eight days and I was so disappointed that the very purpose for which I have been sent here, that purpose is not getting served. But I would submit that the reason for that was that the opposition had raised one issue of price rise and the time for discussion on that issue was given after eight days. If that time for discussion had been fixed earlier that the discussion would be taken up on this day, then all this shouting and disruption would have stopped much earlier. So, that discussion did take place but eight days also got wasted.

---

*English translation of original speech delivered in Punjabi.

Thank you. Thank you very much Sir."

श्री सभापति : श्रीमती रंजीत रंजन।

श्रीमती रंजीत रंजन (छत्तीसगढ़) **:** माननीय सभापति महोदय, सबसे पहले मैं आपको राज्य सभा का सभापति बनने के लिए बहुत-बहुत बधाई देती हूँ। मैं इससे पहले लोक सभा में थी। मुझे तीन-चार स्पीकर्स याद हैं। मैं सोमनाथ दादा और संगमा साहब की बहुत प्रशंसा करती हूँ। यहाँ पर हमारे गार्जियन वेंकैया नायडु साहब थे। इन सबने अपनी एक छाप छोड़ी थी। सभापति जी, मैं आपसे बहुत उम्मीद रखती हूँ। चाहे पक्ष हो या विपक्ष हो, दिनोंदिन हमारे सदन की डिग्निटी, अच्छा कहें या बुरा कहें, धीरे-धीरे नीचे आ रही है। बहुत सारे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, जिन पर यहाँ पर बहस होनी चाहिए, एक-दूसरे को सुनने का साहस होना चाहिए, पेशेंस होनी चाहिए, लेकिन मुझे लगता है कि उसकी कमी है। मैं आपसे दो-तीन बार मिली हूँ, पहले भी हम लोग मिले हैं। मैं आपको एक गार्जियन की तरह देखती हूँ और मुझे पूर्ण उम्मीद है कि जिस तरह से पहले के जो भी सभापति रहे हैं, जिन्होंने अपनी आइडेंटिटी को छिपा कर, अगर आज वे यहाँ पर सभापति हैं, तो सभापति के जो फर्ज़ हैं, उनको उन्होंने निभाने का काम किया है, उसी तरह से आप भी करेंगे। मुझे आपसे बहुत उम्मीद है और विश्वास है कि इस सदन की गरिमा को बचाने के लिए आप एक अहम रोल अदा करेंगे। इसमें आपकी एक अहम जिम्मेदारी है। हम लोग, खास कर जो विपक्ष के रूप में आपके बीच हैं, चाहे उसकी संख्या कम हो या ज्यादा हो, मुझे विश्वास है कि आप हमारे पूछने के जो अधिकार हैं, सवाल पूछने के जो अधिकार हैं, उनको छिनने नहीं देंगे। इस विश्वास के साथ मैं आपको फिर से बधाई देती हूँ। बहुत-बहुत बधाई।

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Rwngwra Narzary; very briefly.

SHRI RWNGWRA NARZARY (Assam): Mr. Chairman, Sir, first of all, I thank you for your favour towards me allowing a little moment to rise before you.

With due respects, I, on behalf of my Party, the United People's Party Liberal, and my Party President, Shri Pramod Boro, would like to express our deep gratitude and honour to you as the hon. Chairman of this Rajya Sabha and wish for your successful tenure in discharging as Chairman of this august House. As I represent Assam from the United People's Party Liberal, which is a small regional party and a NDA partner working in the Bodoland Territorial Region, Assam, I would like to welcome and express my deep respects and honour, on behalf of the millions of the people of Assam, particularly of the Bodoland Territorial Region. Sir, under your able leadership in this august House, I do hope, Your Honour will give ample scope to raise important issues of our State as well as our region. Praying Almighty for your

good health, and with due respects, I do take my seat in this moment. Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Thank you. Shri Vikramjit Singh Sahney, very briefly!

श्री विक्रमजीत सिंह साहनी (पंजाब) **:** सर,

"ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले
ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है?"

This sums up your personality. आपने पिछले कुछ महीनों में जैसा माइक्रो मैनेजमेंट किया है, उसमें आपने हमारे जैसे गैर-राजनीतिक व्यक्ति को भी गले लगाया और इस ऑगस्ट हाउस के एक-एक मेम्बर के साथ डायलॉग किया, इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। आप किसान-पुत्र हैं and, I hope, Sir, this House will be able to bring about significant changes in the plight of farmers. ऐसा कहा जाता है कि आदमी वह बड़ा होता है, जिसके साथ होने पर आप खुद को छोटा महसूस न करें। खासकर, *अज तुसी पंजाबी विच राज्य सभा बुलेटिन शुरू कित्ता है, इस दी भी मैं त्वानू वधाई देंदा हां।* हम उम्मीद करते हैं कि अमृतकाल में एक नए इतिहास की रचना होगी और जैसा मैंने हंड्रेड डेज़ का रिपोर्ट कार्ड दिया, उसी तरह हर चीज़ की निवृत्ति डायलॉग से, बातचीत से होगी और कोई भी मेम्बर वैल में आकर अनवेल नहीं होगा, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you. Now, Shri Ghanshyam Tiwari.

श्री घनश्याम तिवाड़ी (राजस्थान) **:** माननीय सभापति महोदय, मुझे इस बात का बहुत गर्व और खुशी है कि आप जहाँ से आते हैं, वहाँ से मैं आया हूँ और मैंने आपको बचपन से लेकर अब तक एक बहुत बड़ी शख्सियत के रूप में देखा है। नर से नारायण बनने की जो कहानी होती है, उस कहानी को आपने पूरा किया है। झुंझुनू जैसे एक गाँव से निकलकर आपने जिस प्रकार से राजस्थान की सेवा की, उसमें मैंने राजस्थान की विधान सभा में आपके तेवर देखे, लोक सभा के चुनाव में आपके सारे अभियानों में मैं आपके साथ रहा और फिर अन्य मामलों में, चाहे कोर्ट की बात हो या और किसी जगह की बात हो, सब जगह पर मैंने आपका पूरा संघर्षपूर्ण और सफलतापूर्ण जीवन देखा।

MR. CHAIRMAN: I think we will have to decide whether we can let out secrets here!

श्री घनश्याम तिवाड़ी : सर, यह सीक्रेसी नहीं है, बल्कि यह लोगों के लिए प्रेरणा की बात है और इसलिए मैं इस चीज़ को कहना चाहता हूँ। आपका जीवन एक प्रतीक के रूप में है। आप एक ऐसे समाज से हैं, जो समाज पहले जागीरदारी से पीड़ित रहा था। उस समाज में से उठकर इस स्थान

तक पहुँचना, उस समाज को भी बहुत प्रकार से आगे बढ़ाना तथा अन्य समाजों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के कारण राजस्थान में आपका जिस प्रकार का नाम हुआ है, उसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ।

MR. CHAIRMAN: Thank you.

श्री घनश्याम तिवाड़ी : सभापति महोदय, मैं एक बात कहकर अपनी बात समाप्त करूँगा। यहाँ पर लोगों ने सारी भाषाओं में कुछ-कुछ कहा है, तो मैं आपके लिए संस्कृत में कुछ कहना चाहता हूँ:

"शशिना च निशा निशया च शशी शशिना निशया च विभाति नभः।
पयसा कमलं कमलेन पयः पयसा कमलेन विभाति सरः ॥"

माननीय सभापति महोदय, जिस प्रकार चन्द्रमा से रात्रि की, रात्रि से चन्द्रमा की और चन्द्रमा एवं रात्रि दोनों से मिलकर आकाश की शोभा होती है, उसी प्रकार पक्ष और प्रतिपक्ष से एक-दूसरे की, प्रतिपक्ष एवं पक्ष दोनों से आसन की तथा इन तीनों से मिलकर संसदीय लोकतंत्र की जो शोभा होती है, उस संसदीय लोकतंत्र की शोभा को आप बढ़ाने का कार्य कीजिए। इन्हीं शब्दों के साथ, मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, Dr. V. Sivadasan.

DR. V. SIVADASAN (Kerala): Mr. Chairman, Sir, this is the Council of States. So, in the House, we shall hear the voices of States. This is a place for discussion and debate. I believe Mr. Chairman will protect the rights of the Members and provide opportunities for a proper discussion on Bills and other subjects. We request for a proper time on discussions and debates in the House. That is my humble request with you. I congratulate you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Mr. Sivadasan. Because of the time factor, it is becoming difficult to accommodate some of you who wanted to say something. Very briefly, I would complete the list. I request Shrimati Rajani Patil to be very brief.

श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल (महाराष्ट्र) : आदरणीय सभापति जी, हमारे विपक्ष के नेता खरगे साहब के बोलने के बाद हमारे कुछ भी कहने का कोई मतलब नहीं होता, क्योंकि हाथी के पांव में सबके पांव आते हैं। वे हमारी पार्टी की तरफ से बोल रहे थे। सभी लोगों ने जो बोला, उसमें एक बहुत बड़ी बात छूट गई है, जो मैं यहां पर उद्धृत करना चाहती हूं। मैं और मेरी सहकारी

वंदना चव्हाण जी जब आपसे मिलने आए थे, तब हमने जो देखा और महसूस किया, वह सबसे बड़ी बात है, जो एक महिला होकर मुझे लगी, वह मैं आपके बारे में बोलना चाहती हूं। महोदय, सब लोगों को रानी लक्ष्मीबाई चाहिए, लेकिन वह पड़ोस के घर में चाहिए, अपने घर में नहीं चाहिए। आपके यहां हमने देखा कि जिस प्रतिष्ठा से, जिस अभिमान से आपने अपनी धर्मपत्नी डा. सुदेश धनखड़ जी को हमसे मिलवाया और जितने प्यार से आपने उनके बारे में हमें बताया, तो मैं और वंदना जी बाद में भी बहुत देर तक आपके बारे में चर्चा कर रहे थे। उन्होंने पीएचडी की है और आपने उनके बारे में बहुत अच्छा बोला। हमें लगा कि बहुत सारे लोग पत्नियों को सिर्फ घर में रखते हैं और बोलते हैं, लेकिन पत्नी की बात की स्वीकृति नहीं होती है, इसलिए मैं आपका एक पहलू यहाँ रखना चाहती थी। हमारे नेता खरगे साहब ने बोला कि जब हमारा दिन आएगा..., मैं उसका सिर्फ एक श्लोक में उदाहरण देना चाहती हूं कि जब श्री कृष्ण ने अर्जुन को बोला थाः-

"पुरुष बली नहिं होत है, समय होत बलवान।
भिल्लन लूटी गोपिका, वही अर्जुन वही बान।।"

अर्जुन और बान वही था, जब अर्जुन की हार हुई थी, वैसा ही समय हरेक का आता है।

डा. अशोक कुमार मित्तल (पंजाब) **:** आदरणीय सभापति जी, मैं आपका स्वागत करता हूं। मैं आपकी पर्सनैलिटी को दो पंक्तियों में पूरी करना चाहूंगा।

"वे खुद ही नाप लेते हैं, बुलंदी आसमानों की,
परिंदों को नहीं दी जाती तालीम उड़ानों की।"

आप वे शख्स हैं, जो राजस्थान से आए हैं। मेरे माता-पिता जी दिवंगत हैं और वे भी राजस्थान से थे। वे बचपन से हमें कहानियां सुनाते थे कि राजस्थान की लाइफ कितनी टफ है, कितनी हार्ड है, उनको सबको पार करते हुए आप यहां आए हैं। एक बात यह है कि हम लोगों ने राजनीति के स्कूल में नर्सरी में दाखिला लिया है, क्योंकि हम छोटे हैं, तो हमें ज्यादा सीखने की जरूरत है। आप हमें ज्यादा मौका देंगे, ज्यादा समय देंगे, धन्यवाद।

श्री अहमद अशफाक करीम (बिहार) **:** माननीय सभापति जी, हमारा राष्ट्रीय जनता दल से तअल्लुक है। मैं आज आपका ख़ैर मक़दम करते हुए फ़ख्र महसूस कर रहा हूं। आपकी इज्ज़त अफज़ाई करते हुए और जितना सभी माननीय सदस्यों से सुना, उससे और फ़ख्र से सर ऊंचा होता है। कुछ रोज़ क़ब्ल आपने मुझे तबादला-ख्याल करने का मौका फ़राहम किया था। आपकी गुफ्तगू से मैं आपकी काबलियत और आपकी इल्मी सलाहियत का कायल हो गया। मैं उम्मीद करता हूं कि रैशनल एप्रोच के साथ आपकी सरपरस्ती में यह सदन चलता रहेगा और बहुस्न खूबी आगे बढ़ता रहेगा। साबिक़ चेयरमैन की अलविदाई के मौके पर मैंने इसी सदन में कहा था कि आप जैसे बा-वक़ार लोग, बा-वक़ार चेयर दूसरों के हवाले कर देते हैं। आज हम सभी के बीच आप सभापति की कुर्सी को ज़ीनत बख्श रहे हैं।

1.00 P.M.

†**جناب احمد اشفاق کریم (بہار):** مانیے سبھاپتی جی، ہمارا راشٹریہ جنتا دل سے تعلق ہے۔ میں آج آپ کا خیر مقدم کرتے ہوئے فخر محسوس کررہا ہوں۔ آپ کی عزت افزائی کرتے ہوئے اور جتنا سبھی مانیہ سدسیوں سے سنا، اس سے اور فخرسے سر اونچا ہوجاتا ہے۔ کچھ روز قبل آپ نے مجھے تبادلہ خیال کرنے کا موقع فراہم کیا تھا۔ آپ کی گفتگو سے میں آپ کی قابلیت اور آپ کی علمی صلاحیت کا قائل ہوگیا۔ میں امید کرتا ہوں کہ ریشنل اپیروچ کے ساتھ آپ کی سرپرستی میں یہ سدن چلتا رہیگا اور بحسن وخوبی آگے بڑھتا رہے گا۔ سابق چئیرمین کی الوداعی کے موقع پر میں نے اسی سدن میں کہا تھا کہ آپ جیسے باوقار لوگ، باوقار چئیر دوسروں کے حوالے کردیتے ہیں۔ آج ہم سبھی کے بیچ آپ سبھاپتی کی کرسی کو زینت بخش رہے ہیں، بڑے مسرت کی بات ہے۔

मैं ईश्वर से दुआ करता हूं कि आप सेहत और आफ़ियत के साथ इस सदन को आगे बढ़ाते रहें। बड़ी खुशी होती है, जब मुझे बैठाकर कोई मेरी तारीफ करता है और सच्चाई बयान करता है। मैं कितना खुश हूं कि आप बैठे इस ज़ीनत भरी कुर्सी पर हैं और सारे लोग आपके तअल्लुक से बड़ी-बड़ी बातें कह रहे हैं यह खुशी का मौका है, बहुत-बहुत शुक्रिया।

†**جناب احمد اشفاق کریم** : میں ایشور سے دعا کرتا ہوں کہ آپ صحت اور عافیت کے ساتھ اس سدن کو آگے بڑھاتے رہیں۔ بڑی خوشی ہوتی ہے، جب مجھے بٹھاکر کوئی میری تعریف کرتا ہے اور سچائی بیان کرتا ہے۔ میں کتنا خوش ہوتا ہوں آپ بیٹھے اس زینت بھری کرسی پر اور سارے لوگ آپ کے تعلق سے بڑی بڑی باتیں اور تعریف کررہے ہیں یہ خوشی کا موقع ہے، بہت بہت شکریہ۔

श्री इमरान प्रतापगढ़ी (महाराष्ट्र) : आदरणीय सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत स्वागत है, ख़ैरमक़दम है। ये वे पहले शब्द हैं जो मैं इस हाउस में पहली बार बोल रहा हूं। पिछली बार विदाई समारोह था, तब ऐसा मौका आया था कि मैं बोलूं, लेकिन मुझे लगा कि मैं स्वागत समारोह में बोलूंगा तो ज्यादा अच्छा रहेगा। मैं आपसे एक मिनट का समय चाहता हूं। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि मैं इस सदन में दूसरा सबसे कम उम्र का सदस्य हूं। मेरी आपसे यह गुज़ारिश है कि ये जो दीवारें हैं, ये सिर्फ ईंट, गारे और लकड़ी से बनी हुई नहीं हैं। इनमें न जाने देश के कितने करोड़ों लोगों की भावनाएं और जज्बात शामिल हैं। ऐसे में देश चाहता है कि यहां अच्छी बातों पर बहस हो, बातचीत हो। आप राज्य सभा परिवार के मुखिया हैं, इसलिए आपकी ज़िम्मेदारी बनती है कि अगर हम सारे लोग यहां से अवाम की बात उठाएं तो आप हमें महफ़ूज़ रखें और हमारी नुमाइंदगी करते हुए हमें बोलने का मौका दें। चूंकि आपने देश के उच्चतम न्यायालय में इन्साफ की लड़ाई लड़ी है, यह देश का उच्च सदन है तो हमें उम्मीद है कि आप हमें यहां इन्साफ की लड़ाई लड़ने देंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभा के नेता (श्री पीयूष गोयल) : माननीय सभापति महोदय, आज हम सबके लिए बहुत खुशी और गर्व की बात है कि आप इस उच्च सदन के सभापति के रूप में इस प्रतिष्ठित पद पर आसीन हो रहे हैं। मैं दिल की गहराइयों से आपको बधाई और शुभकामनाएं देना चाहता हूं। माननीय प्रधान

---

†Transliteration in Urdu script.

मंत्री जी ने अभी-अभी हमें याद दिलाया कि आज आर्म्ड फोर्सेज़ फ्लैग डे भी है। मुझे याद आ रहा था कि एक अंग्रेज़ी फिल्म 'Star Wars' थी, जिसमें एक बड़ा प्रसिद्ध वाक्य हुआ था, 'May the Force be with you.'

आज तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें बोली गई हैं। कुछ माननीय सदस्यों ने आपको चक्कर में न आने की भी सलाह दी। अभी-अभी एक युवा सदस्य ने आपकी ज़िम्मेदारियों के बारे में आपको याद दिलाने की कोशिश की। यह अलग बात है कि ज़िम्मेदारी तो हम सबकी बनती है कि सदन अच्छा बने, अच्छी तरह से चले। आपकी ज़िम्मेदारी तो हम सबका ख्याल रखने की है। सदन अच्छा चलाना तो हम सबके हाथ में है और मेरा विश्वास है कि आज जो अच्छी-अच्छी बातें रखी गई हैं, जिस प्रकार से उत्साह के साथ सबने आपका स्वागत किया है, आगे आने वाले दिनों में हम यह भावना हमारे काम में भी रखेंगे। कल ही आपके साथ लगभग सभी सदस्यों का मिलना-जुलना हो चुका है। एक न एक मौके पर हम सब आपसे मिल चुके हैं। मैं इतना ज़रूर कह सकता हूं कि it is a joy to be with you, to meet you, to exchange notes with you, to talk to you. अब पता नहीं आप वह राजस्थान से लेकर आए हैं या City of Joy से लेकर आए, जहां से आप बहुत ही सफल गवर्नर का कार्यकाल करके दिल्ली आए। आपकी अध्यक्षता में इस सदन में हम सब मिल कर बहुत सारे जॉयफुल ओकेज़न्स सेलिब्रेट करेंगे, इसका मुझे पूरा विश्वास है। इस सदन के काम की महत्ता को देखते हुए हम सब कोशिश करेंगे कि सदन को सुचारू रूप से चलाने में सहयोग करें। आप एक किसान पुत्र हैं, जो आज देश के उपराष्ट्रपति बने हैं, आप हम सबके लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी हैं। जिस प्रकार से आपने बहुत ही विपरीत परिस्थितियों से अपना जीवन शुरू करके आज इस उच्च पद तक की जर्नी ट्रैवर्स की है, मेरा पूरा विश्वास है कि हम सब भी उससे बहुत कुछ सीखेंगे और अपने काम में उसकी झलक आपको दिखाने की कोशिश करेंगे। हम सब बहुत गर्व महसूस करते हैं कि आपकी जो बुद्धिमत्ता है, जिस प्रकार से आपने बहुत वरिष्ठ वकील के रूप में देश की सेवा की, न्यायालय की सेवा की, शायद you must have been the youngest to become a senior advocate in the Supreme Court within eleven years of your practice. मैं समझता हूं कि शायद उस समय जजेज़ ने भी कुछ स्पार्क देखी होगी, कुछ ऐसा अलग देखा होगा, जिसके कारण आपको यह बहुत बड़ा स्थान मिला और उच्च न्यायालय से बहुत बड़ा सर्टिफिकेट दिया गया। एक नई परंपरा, जो इस देश में स्थापित हो रही है कि बड़े सामान्य घर से, सामान्य जीवन बिताने वाले, साधारण परिवार के राजनीतिक नेता या समाज के नेता आज बड़े-बड़े पदों पर हैं। हमारी महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी एक टीचर थीं। वे एक छोटे से स्कूल में टीचर के पद से, ओडिशा के वनवासी क्षेत्र से आकर आज इस देश के सर्वप्रथम पद पर आसीन हैं। आप एक किसान पुत्र, धरती पुत्र हैं, जिन्होंने एक छोटे से गांव में, जैसा आज बताया गया कि सैनिक स्कूल से शिक्षा ली, रोज 12 किलोमीटर दूर चलकर जाना - शायद यह भी एक कारण है कि आप आज भी इतने फिट हैं। आप आज उपराष्ट्रपति के रूप में इतने ऊंचे पद पर आसीन हैं। हमारे सम्माननीय प्रधान मंत्री जी ने एक चाय वाले के घर में पैदा होकर और अपने बचपन में रेलवे स्टेशन पर चाय बेचकर शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने अपना पांच दशक से अधिक का पूरा जीवन देश की सेवा में, समाज की सेवा में पूरी तरह से झोंक दिया। यह जो नई परंपरा है, इस समाज के अंदर यह चेतना जगी है, समाज में एक विश्वास जगा है कि इस देश में सभी के

लिए स्थान है। आज सरनेम के हिसाब से पद नहीं, लेकिन क्षमता और कार्य के हिसाब लोगों को मौका मिलता है। मैं समझता हूं कि उसका एक प्रतीक आप भी हैं और आगे आने वाले दिनों में आपके लंबे अनुभव का, आपकी इस कार्यशैली का लाभ और मार्गदर्शन हम सभी सदस्यों को मिलता रहेगा। जैसे कहा जाता है और अभी-अभी हमारी बहिन ने कहा कि, "behind every successful man, a force, a power" और हमने वह पॉवर आपके घर में देखी। हम सभी का यह अनुभव रहा कि जिस प्रकार से आपने परिवार के अंदर भाभी जी को सम्मान दिया, जिस प्रकार से हम सभी के बीच नारी शक्ति की बात कही, तो मुझे याद आया कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी 15 अगस्त को अपने विचार रखते हुए, अपने उद्बोधन में यह बात रखी थी कि देश को जब हम विकसित बनाने की बात करते हैं, तो हमें नारी शक्ति को और सशक्त बनाना होगा। मैं समझता हूं कि बहिन रजनी जी ने ठीक कहा कि उसका भी एक अच्छा उदाहरण हमें आपके घर में देखने को मिला। ऊर्जावान व्यक्तित्व, जिस प्रकार से आपने सदस्यों से निजी जुड़ाव बनाया है, आपकी सहज मुस्कान, आपके सोचने की प्रक्रिया और क्विक विट एंड ह्यूमर आदि हम सबको आपके प्रति आकर्षित करता है। मुझे विश्वास है कि आपकी जो इन्फैक्शियस स्माइल है, यह आगे चलकर सदन को भी चलाने में सुविधा देगी और आप हम सबको सही रास्ते में रहने का मार्ग भी जरूर बताते रहेंगे। कल जब पहली बिजनेस एजवाइज़री कमेटी की बैठक चल रही थी, तब हमें आपकी स्कॉलर्ली एंड रीज़न्ड अप्रोच देखने का मौका मिला। मैं आपके कमेंट से बड़ा इम्प्रेस हुआ कि स्टैटेस्टिक्स डिटर्मिन नहीं करती है कि विषय को आगे कैसे लेकर जाना है, स्टैटेस्टिक्स पर निर्भर नहीं होगा कि कोई बिल स्टैंडिंग कमेटी में जाए या सेलेक्ट कमेटी में जाए। Statistics have their own place, but substance will matter. सब्स्टांस के ऊपर तय करना पड़ेगा कि कार्यवाही में किस प्रकार से आगे बढ़ना है। समय भी बहुत जरूरी होता है, समय वेस्ट न हो और समय का सदुपयोग हो। जब कोई कानून या कोई कार्य हम सबके समक्ष हाउस में रहता है, तो जरूर उसकी कोई न कोई इम्पॉर्टेंस है और उसके समय की इम्पॉर्टेंस है। कई विषय ऐसे हैं, जिन पर आम सहमति बन सकती है, आम सहमति से कार्य आगे तेज गति से बढ़ सकता है। हमें इस अमृतकाल में अगर इस देश को विकसित बनाना है, जिसके लिए मैं समझता हूं कि देश का हरेक सदस्य एकजुट है, एकमत का है। इसलिए स्वाभाविक रूप से समय की भी अपनी अहमियत है और जो निर्णय देशहित में हैं, जनहित में हैं, उनके संबंध में त्वरित निर्णय लेने का बहुत बड़ा मैसेज देश को जाता है, समाज को जाता है।

माननीय सभापति जी, मैं आपका एक और विषय के लिए तहे-दिल से धन्यवाद करना चाहता हूं। आपने हम सबका मान रखा और इस उच्च सदन का मान रखा, पूरी लोकतांत्रिक प्रक्रिया का मान रखा, क्योंकि एक विषय, जो कई वर्षों से सबको पीड़ा दे रहा था कि क्या पार्लियामेंट में पास किया हुआ कानून और ऐसा कानून जिसमें सर्व-सम्मति थी, लोक सभा में सर्व-सम्मति, राज्य सभा में एक ऐब्स्टेंशन को छोड़ दें, तो सभी राजनीतिक दलों और सभी बाकी सदस्यों ने सर्व-सम्मति से एक कानून को पारित कर दिया है, तो उसकी एक अहमियत होती है। जब आपने 'We the people' का उद्बोधन दिया, जिस प्रकार से आपने 'will of the people' के बारे में अपने एक रिसेंट भाषण में बात रखी, तो मैं समझता हूं कि इस सदन के हर सदस्य के

आत्म-सम्मान की आपने उस दिन चिंता की, आपने एन्श्योर किया कि हमारा भी हौसला बने कि हम आगे चलकर भी देशहित और जनहित के कानून बनाते रहें।

माननीय सभापति जी, आपकी जो दो ओवरसीज़ विज़िट्स रही हैं, वे भी वास्तव में हम सबको बहुत गौरवान्वित करती हैं। हमने आपको वहां पर विश्व के बड़े-बड़े नेताओं के साथ चर्चा करते हुए देखा। देश ने बहुत तीव्रता से कोविड महामारी की लड़ाई लड़ी, कल ही सुप्रीम कोर्ट ने इस बात का उल्लेख किया, वहां पर इस बात की तारीफ की गई कि कैसे पूरे देश ने मिलकर, केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों ने मिलकर, सबने मिलकर कोविड महामारी से लड़ाई लड़ी, कैसे केन्द्र सरकार ने देश में भुखमरी नहीं होने दी। "प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना" से देश के कोने-कोने तक 80 करोड़ से अधिक भारतवासियों को मुफ्त में अनाज पहुंचाने का जो काम किया, उसकी कल सुप्रीम कोर्ट में भी काफी विस्तार से तारीफ हुई है। आपने यह बात विश्व नेताओं के सामने रखी, विश्व के सबसे बड़े आर्थिक दृष्टिकोण से मजबूत नेताओं के सामने रखी, जिसके बारे में आपने बताया कि उन सब ने इसकी तारीफ की, भारत की तारीफ की, तो मैं समझता हूं कि इससे हर मेम्बर का, हर सदस्य का सीना चौड़ा होता है, क्योंकि उसमें हम सबका भी एक छोटा-सा योगदान है।

माननीय सभापति महोदय, मैं समझता हूं, when great people set the direction, others follow them. Under your leadership, we will work with the high ideals, high principles, with which you will set the direction. And, I am sure, the work of the Rajya Sabha, the work that we do in this Upper House, the House of Elders, the House of States, will also resonate in other Houses, the Assemblies, across the country. I am sure, the way we are all working for a developed India, we are all working to take the prosperity to the last man at the bottom of corridor, the last man at the bottom of the pyramid, गरीब से गरीब व्यक्ति के लिए अंत्योदय की भावना से आज हम सब काम कर रहे हैं ताकि देश में कोई वंचित न रहे, कोई शोषित न रहे, कोई पीड़ित न रहे, समाज के हर वर्ग का बिना भेदभाव से उत्थान हो। जिससे कि दुनिया में हमारे देश का वर्चस्व बना रहे, इस काम के लिए पूरा देश एकजुट है। आज पूरी दुनिया भारत की प्रशंसा कर रही है और विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को गति देने के लिए, प्रगति देने के लिए भारत की ओर देख रही है। आज पूरा विश्व देख रहा है कि हमारे 140 करोड़ लोगों में जो क्षमताएं हैं, जो संभावनाएं हैं, उससे पूरा विश्व आकर्षित भी होता है और उनकी उम्मीद भी भारत के ऊपर टिकी हुई है। ऐसे में मैं समझता हूं कि इस सदन की भूमिका भी बहुत अहम रहेगी। आपके कुशल नेतृत्व में, आपकी बुद्धिमत्ता से हम पूरे देश को ऐसा संदेश देंगे कि एक अच्छा सदन अच्छे तरीके से चलेगा, अच्छे तरीके से काम करेगा और देश के करोड़ों लोगों की जो आशाएँ हैं, जो अपेक्षाएँ हैं, जो सपने हैं, उनको पूरा करने में हम सभी अपना दायित्व निभाएंगे। आपके नेतृत्व में, आपके मार्गदर्शन में, सदन के हर सदस्य के बिहाफ पर मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम अपनी जिम्मेदारी, अपने दायित्व का जरूर निर्वाहण करेंगे और इस सदन की कार्यवाही को अच्छे तरीके से चलाएंगे। आपके इस आसन पर पद ग्रहण

करने पर हम सभी की तरफ से आपको पुनः बहुत-बहुत बधाई, बहुत-बहुत शुभकामनाएं। सभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Hon. Leader of the House, Shri Piyush Goyal; hon. Leader of the Opposition, Shri Mallikarjun Kharge, hon. former Prime Minister, Shri H.D. Devegowda, hon. Ministers, hon. leaders of respective parties and hon. Members, deeply moved and touched by the indulgent words of welcome by the hon. Prime Minister, hon. Leader of the Opposition, the Leader of the House and those who followed; grateful to the hon. Members of Parliament for affording opportunity to be in service of *Bharat* as Vice-President of India and Chairman of this august House; looking forward to contributing to growth trajectory of the largest vibrant democracy in the world and vindicate its trust and confidence.

Hon. Members, availing this historic opportunity to share some concerns with the distinguished Members of this august House, the terms 'Upper House' and 'House of Elders', though not part of the official glossary, amply reflect uniquely significant importance of this institution. Nation justifiably expects the House of Elders to take decisive, directional lead in reaffirming and enhancing the core values of the Republic and setting up the traditions of Parliamentary democracy exemplifying the highest deliberative, emulative standards. Today, as we are in *Amrit Kaal,* we cherish one of the world's finest Constitutions as our own. The Members of the Constituent Assembly were enormously talented with impeccable credentials and immense experience. The Constituent Assembly, given the scenario then, was as representative as was practicable. Hon. Members, with each election, there has been progressively authentic enhancement in the representation gradient. Presently, the Parliament reflects with authenticity the mandate and aspirations of the people as never before. Hon. Members, the Constituent Assembly addressed sensitive, complex and critical issues exemplifying sublimity, engaging in dialogues, discussions, deliberations and debate marked with cooperative and consensual attitude. Diverse issues were traversed without there being any disruption, any rancour. Obstruction and disruption of proceedings of parliamentary practice are options that are antithetical to democratic values. Contemporaneous scenario on this count is concerning and makes it imperative for us to follow the high standards set in the Constituent Assembly. We need to be cognizant of severe public discomfort and disillusionment and the lack of decorum in the temple of democracy. Hon. Members, democracy blossoms and flourishes when its three facets, the Legislature, the Judiciary and the Executive, scrupulously adhere to their respective domains. The

sublimity of doctrine of separation of powers is realized when the Legislature, Judiciary and the Executive optimally function in tandem and togetherness, meticulously ensuring scrupulous adherence to respective jurisdictional domain. Any incursion by one, howsoever subtle, in the domain of the other, has the potential to upset the governance apple cart. We are indeed faced with this grim reality of frequent incursions. This House is eminently-positioned to take affirmative steps to bring about congeniality amongst these wings of governance. I am sure, the hon. Members will reflect and engage in way-forward stance.

Hon. Members, essence of democracy lies in the prevalence of the ordainment of the people, reflected through legitimized-platform. In any democracy, parliamentary sovereignty is inviolable. We all here are under oath to preserve it. Power of the Parliament of the day to act in exercise of its constituent power to amend by way of addition, variation or repeal, any provision of this Constitution in accordance with the procedure is unqualified and supreme, not amenable to Executive attention or judicial intervention, except for the purpose of deciding any case involving a substantial question of law as to interpretation of the Constitution envisaged in Article 145(3) of the Constitution. Using this constitutional power to amend, Parliament enacted wholesome structural governance-changes to further spinally strengthen our democracy. This has been by way of incorporation of Parts 9, 9A and 9B in the Constitution providing comprehensive mechanism for Panchayati Raj, municipalities and cooperative societies.

Hon. Members, in similar vein, the Parliament, in a much-needed historic step, passed the 99th Constitution (Amendment) Bill, paving way for the National Judicial Commission. There was unprecedented support to the above. On August 13, 2014, the Lok Sabha unanimously voted in its favour with there being no abstention. This House too passed it unanimously on August 14, 2014 with one abstention. Rarely in parliamentary democracy, there has been such massive support to a constitutional legislation. This process fructified into a constitutional prescription after 16 State Assemblies, out of 29 States, ratified the Central legislation. The President of India in terms of Article 111 accorded his consent on December 31, 2014. This was culmination of a basic fundamental parliamentary process. This historic parliamentary mandate was undone by the Supreme Court on October 16, 2015 by a majority of 4:1 finding the same as not being in consonance with the judicially-evolved doctrine of basic structure of the Constitution. Hon. Members, there is no parallel to such development in democratic history where a duly legitimized constitutional

prescription has been judicially undone, a glaring instance of severe compromise on parliamentary sovereignty and disregard of the mandate of the people of which this House and the Lok Sabha are custodians. Hon. Members, we need to bear in mind that in democratic governance any basic structure is the prevalence of primacy of the mandate of the people reflected in the Parliament. Parliament is the exclusive and ultimate determinative of the architecture of the Constitution. It is disconcerting to note that on such a momentous issue, so vital to democratic fabric, there has been no focus in the Parliament now for over seven years. This House, in concert with the Lok Sabha, being custodian of the ordainment of the people, is duty-bound to address the issue, and I am sure it would do so.

Hon. Members, authorities in constitutional positions in any institution are required to exemplify their conduct by high standards of propriety, dignity and decorum. It is time for all constitutional institutions to reflect and give quietus to public display of adversarial challenging stance, trading or exchange of advisories emanating from these platforms. I urge the Members of the House to proactively catalyze evolution of a wholesome cordial ecosystem ending this aberration. It is institutional seamless character marked with mutual trust and respect that generates the ecosystem best suited for serving the nation. This House needs to catalyse this wholesome environment to promote synergic functioning of constitutional institutions emphasizing the need to respect the *lakshman rekha*.

Hon. Members, as Vice-President, I had the honour to represent the country at the India-ASEAN and East Asia Summits in Phnom Penh, Cambodia on November 12 and 13, 2022, and at the FIFA World Cup inaugural ceremony in Doha, Qatar, on 20th November, 2022. I share with you my deep sense of pride and satisfaction at the level of respect India commands amongst world leaders and their hopes and expectations that our growth trajectory generates global peace and prosperity.

Hon. Members, I look forward, with hope and expectation, to a pleasant and fruitful association so that we all, in togetherness, optimally serve the nation. Once again, I thank you most earnestly for your generous felicitations and I would do my utmost to come up to your very high expectations. As foot soldier of the Constitution, आप सबको प्रणाम करके मैं अपने कार्य का श्रीगणेश करता हूँ।